विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक
देवपुत्र
श्रावण-भाद्रपद २०७३ / अगस्त २०१६
ISSN-2321-3981
₹ १५

दृष्टि The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

Online Test Series

For Preliminary Exam-2016

Get yourself prepared for 7th August, 2016

General Studies & CSAT

Starts from: 24th January, 2016

First test Free for all students

For More Details visit: drishtiias.com

विभिन्न राज्यों से जुड़े
हिंदी माध्यम के IAS टॉपर
क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...

राजेन्द्र पैंसिया
IAS- उ.प्र. कैडर

"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गूगल ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"

Available at your nearest book shop

वितरण और विज्ञापन के लिए संपर्क करें–
(+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 Contact : 011-47532596, (+91) 8130392354-56-57-59

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण-भाद्रपद २०७३ ▪ वर्ष ३७
अगस्त २०१६ ▪ अंक २

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

पत्र-पत्रिकाओं में हमें प्राय: ऐसे अनेक प्रसंग पढ़ने को मिलते हैं कि अमुक व्यक्ति ने, फिर चाहे वह पुरुष हो अथवा महिला, अपने प्रयास से किसी विशिष्ट क्षेत्र में अभूतपूर्व या अतिविशिष्ट सफलता प्राप्त कर ली। यदि ऐसे प्रसंगों का सम्पूर्णता से और उनकी गहराई तक जाकर अध्ययन किया जाए तो निष्कर्ष यही प्राप्त होगा कि वे अपने प्रयत्न में सतत् लगे रहे। निराशा और असफलता के तनाव से मुक्त होकर जब **प्रयत्नों में सातत्य** रहता है तो सफलता कदम चूमती ही है।

किन्तु सफलता के मार्ग का एक शत्रु और है। उससे दो-दो हाथ करना और उसे पछाड़ने की सदा तैयारी रखना भी इतना ही आवश्यक है। अगर वह हम पर हावी हो गया तो '**कछुआ खरगोश की दौड़**' के खरगोश की भांति हम जीती बाजी हार सकते हैं। आप जानते हैं उस शत्रु का नाम- परन्तु मैं फिर से स्मरण करा रहा हूं। उसका नाम है-**आलस्य**। क्षण भर के विश्राम की चाह या 'इसे बाद में कर लेंगे' हमारे वे भाव हैं जो हमें आलस्य की ओर ढकेलते हैं और फिर शत्रु रूप 'आलस्य' हम पर हावी होने लगता है।

अत: **उद्यमेन हि सिध्यन्ति** का भाव लेकर सफलता की सिद्धि तक उद्यमशील बने रहना ही श्रेयस्कर है। सफलता की सीढ़ियां चढ़ने वाले सभी श्रेष्ठ महानुभावों ने यही किया है। अपने अत्यल्प साधनों अथवा मार्ग की बाधाओं की चिंता किए बिना वे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उद्यमी बने तो उन्होंने मंजिल पा ही ली।

हमारे नीति शास्त्र में भी उल्लेख है-

'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपु:।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वाऽयं नावसीदति।।'

अर्थात आलस्य मनुष्य के शरीर में ही निवास करने वाला उसका महान शत्रु है। उद्यम के समान उसका कोई दूसरा बन्धु नहीं है, जिसके करने से उसका कभी नाश नहीं होता यानी असफलता नहीं मिलती।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

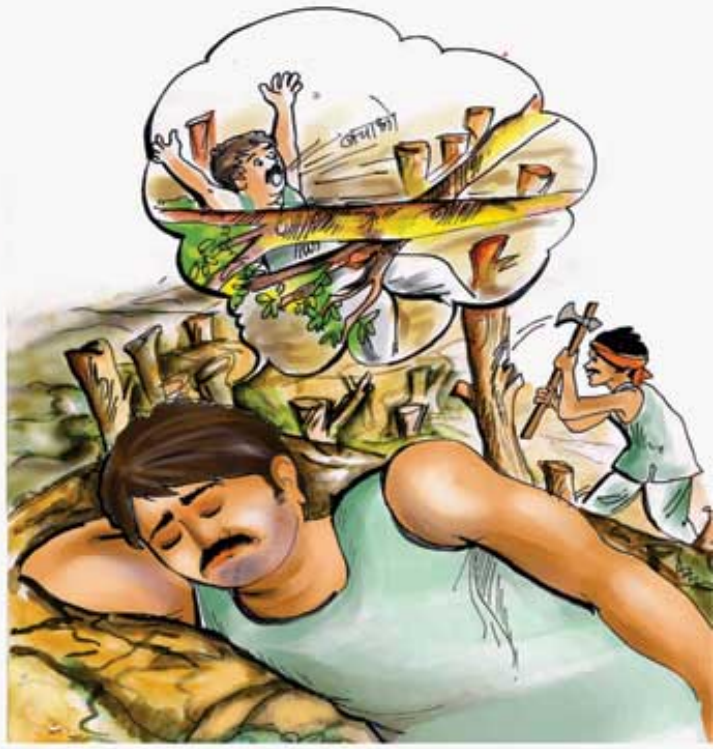

कहानी

- बालक राजा - शकुन्तला जायसवाल ०५
- सबका भाई - डॉ. सेवा नन्दवाल १६
- आलस्य का परिणाम - राजकुमार जैन 'राजन' ३०
- ताकतवर कौन? - मीना ३९
- वीरान जंगल - हरीराम कहार ४१

अनुवाद

- परोपकारी कौआ ? - शिवचरण मंत्री २४

आलेख

- दीपा करमाकर - संजय वर्मा २०

गीत रूपक

- मेह बाबा आजा रे - सुरेन्द्र अंचल १०

कविता

- रजकण माथे का... - मधुसूदन साहा ०९
- त्रिकोण - लक्ष्मीनारायण भाला १२
- मातृभूमि प्रियमेरी - सोमदत्त त्रिपाठी १४
- राखी का त्यौहार - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना १९
- खेल पुराने - सतीश मिश्र २२
- दो हाथ - पद्मा चौगांवकर ३३
- वर्षा आई - डॉ. दादूराम शर्मा ३४
- पेड़ चढ़ा पहाड़ - संतोष परिहार ३५
- गुस्सा बादल का - हरप्रसाद रोशन ३७
- इन्द्रधनुष जी - राजनारायण चौधरी ४०
- लप्पू सेठ - आ. शिवप्रसाद सिंह ४३

चित्रकथा

- आजादी - देवांशु वत्स ४४
- राम की राखियां - देवांशु वत्स ५०

स्तंभ

- हमारे राज्य पुष्प डॉ. परशुराम शुक्ल २९
- आपकी पाती --- ३८
- पुस्तक परिचय --- ४६

बाल प्रस्तुति

- तीन रंग का झण्डा प्यारा - राधिका ठाकुर ०६
- हमारी बस्ती - प्रतिष्ठा द्विवेदी २७
- उठ बेठ खड़े हो जाओ - मनीष धाकड़ ४३

एवं ढेरों मनोरंजक व ज्ञानवर्धक सामग्री

(शौर्य गाथाः सन् १८५७ के विप्लव का वीर बलिदानी)

बालक राजा

कहानी : शकुन्तला जायसवाल

सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के समय की कथा है हैदराबाद के समीप ही जेरापुर नाम की एक छोटी सी रियासत थी। वहाँ का राजा बहुत छोटी उम्र का था। उसने अंग्रेजों के साथ लड़ने के लिए अरब और रोहिला पठानों की एक फौज तैयार की थी।

सन् १८५८ ई. की फरवरी में राजा हैदराबाद आया था। इसकी सूचना मिलते ही निजाम के स्वामीभक्त वजीर सलारजंग ने तुरंत उसको गिरफ्तार करके अंग्रेजों को सौंप दिया।

इस बालक राजा की गिरफ्तारी का वृत्तांत अत्यंत

प्रशंसनीय और वीरोचित है। कर्नल मेटोज टेलर नामक एक अंग्रेज अधिकारी के साथ राजा का बड़ा प्रेम था। राजा उन्हें अप्पा कहता था। जेलखाने में मेटोज टेलर ने राजा से मिलकर उससे दूसरे विप्लवकारियों के नाम पूछे। राजा ने गर्व से उत्तर दिया–''नहीं अप्पा!! मैं उनके नाम कभी नहीं बताऊंगाा कदाचित् मैं अपने प्राणों के लिए भीख मांगूँगा– यह मत समझिएगा। पर अप्पा! मैं दूसरे की दया पर कायर की तरह जीना नहीं चाहता, वैसे ही मैं अपने देशबन्धुओं के नाम भी प्रकट नहीं कर सकता।'' कर्नल मेटोज एक दिन फिर राजा के पास गए। उन्होंने बालक राजा से कहा–''तुम यदि दूसरों के नाम बता दोगे तो तुम्हें क्षमा कर दिया जाएगा।'' राजा ने उत्तर दिया–''अप्पा साहेब! जब मैं मृत्यु के मुख में जाने की तैयारी कर रहा हूँ, तब क्या मैं विश्वासघात करके अपने देशवासियों के नाम आपको बतला दूँ? नहीं, नहीं, तोप या कालापानी ये सब मेरे लिए इतने भयंकर नहीं हैं, जितना भयंकर विश्वासघात है।''

कर्नल टेलर ने राजा से कहा– ''तुमको प्राण दण्ड दिया जाएगा।'' राजा ने जवाब दिया–''अप्पा! मेरी एक प्रार्थना है, मुझे फांसी पर मत चढाइएगा। मैं चोर नहीं हूं। मुझे तोप के मुँह पर बाँधकर उड़ा दीजिएगा। फिर देखिएगा– मैं कितनी शांति से तोप के सामने खड़ा रह सकता हूँ।'' कर्नल टेलर के कहने से बालक राजा को काले पानी की सजा दी गयी।

जब उसे कालेपानी भेजा जा रहा था, तब राजा ने हँसी हँसी में ही अपने अंग्रेज पहरेदार की पिस्तौल ले ली और मौका देखकर अपने ऊपर गोली दाग ली। इसके पहले उसने एक बार कहा था ''मैं कालेपानी की अपेक्षाा मृत्यु को अधिक पसंद करता हूँ। कैद और कालेपानी को तो मेरी प्रजा का एक तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति भी पसंद नहीं करेगा–तब मैं तो राजा हूँ।''

भारत के इस बलिदानी बालक राजा के प्रति हमारे कोटि कोटि नमस्कार।

● कटघोरा (छ.ग.)

(बाल प्रस्तुति)

तीन रंग का झण्डा प्यारा

कहानी : राधिका ठाकुर

तीन रंग का झण्डा प्यारा,
मस्ती से लहराता है।
भारत की यह शान है,
वीरों का यह प्राण है।
चक्र बीच में आगे बढ़ना!
मित्रो! हमें सिखाता है,
डरो नहीं तुम झुको नहीं तुम,
यह हमको बतलाता है।
झुकने देंगे कभी न इसको,
हम सबको बतलाते हैं।
हमें जान से प्यारा झण्डा।
कसम देश की खाते हैं।

● ग्वालियर (म.प्र.)

(अखण्ड भारत संकल्प दिन : १४ अगस्त)

देवपुत्र प्रश्नमंच

बच्चो! अपनी भारत माता की अखण्ड प्रतिमा हम सबके लिए आराध्य है। दुर्भाग्यवश इस भव्य प्रतिमा (भूमि) को अनेक बार खण्डित किया गया। प्रश्नमंच के माध्यम से जानिए देश के विभाजन की पीड़ा और संकल्पित होइए इसको अखण्ड बनाने के प्रयत्नों के लिए।

◀◀ (१) उपगणस्थान (अफगानिस्तान) भारत से कब अलग हुआ?
(अ) १८७५
(आ) १८५७
(इ) १९४७

◀◀ (२) किस सन् में सिंहलद्वीप (श्रीलंका) हमसे अलग हो गया?
(अ) १९५०
(आ) १९११
(इ) १८५७

◀◀ (३) किस सन में हमसे ब्रह्मदेश (बर्मा) छूट गया?
(अ) १९४७
(आ) १९१२
(इ) १९३५

◀◀ (४) १९४७ में भारत का कौनसा अंग कट कर भारत से पृथक हुआ।
(अ) बांग्लादेश
(आ) पाकिस्तान
(इ) नेपाल

◀◀ (५) कब भारत से त्रिविष्टप (तिब्बत) अलग हो गया?
(अ) १९५०
(आ) १९४७
(इ) १९२०

◀◀ (६) कब भारत से आजाद कश्मीर काट दिया गया?
(अ) १९४७
(आ) १९४५
(इ) १९४८

◀◀ (७) कब चीन से अक्साई चीन का ६२ हजार वर्ग कि.मी. हिस्सा बचाया जा सका?।
(अ) १९७०
(आ) १९८२
(इ) १९६०

◀◀ (८) १८५७ में बेरूबाड़ी, १९५७ में चीन द्वारा कुछ हिस्सा, १९६३ में बर्मा द्वारा टेबल आइलैण्ड और पाकिस्तान द्वारा छारी फुलाई (कच्छ) भारत से पृथक कर लिया गया। १९७२ में कच्चाटिबू द्वीप भारत के किस देश के पास चला गया।
(अ) नेपाल
(आ) भूटान
(इ) श्रीलंका

◀◀ (९) १९८२ में हमारे किस प्रांत का हिस्सा चीन ने छीन लिया?
(अ) अरुणाचल
(आ) मिजोरम
(इ) आसाम

◀◀ (१०) १९९२ में भारत में तीन बीघा जिस देश ने लेकर चीन को दे दिया २०१२ में फिर कुछ हिस्सा हथियाया वह देश कौनसा है?
(अ) पाकिस्तान
(आ) बांग्लादेश
(इ) बर्मा

(उत्तर इसी अंक में।)

जानो पहचानो

* वे अपने युग के अत्यंत निर्भीक पत्रकार थे 'केसरी' और 'मराठा' समाचार पत्रों में उनकी ललकार और फटकार से अंग्रेज सरकार कँपकँपा जाती थी।

* वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रखर एवं उग्र तेजस्वी नेता माने जाते थे उनका दल गरम दल कहलाता था।

* 'शिवाजी उत्सव' एवं 'गणेशोत्सव' को सार्वजनिक रूप से मनाने की परम्परा प्रारंभ कर उन्होंने समाज में जागृति एवं संगठन भाव को जगाया।

* माण्डले की जेल में उन्होंने 'गीतारहस्य' नामक उत्तम ग्रंथ की रचना की।

* उनका जन्म २३ जुलाई १८५६ को पूना में हुआ और १ अगस्त १९२० को वे 'पूर्ण स्वराज का स्वप्न' लिए ही मातृभूमि की गोद में सदा के लिए सो गए।

(उत्तर इसी अंक में।)

राष्ट्रीय प्रतीकों में रंग भरो

माणकचन्द गेहलोत

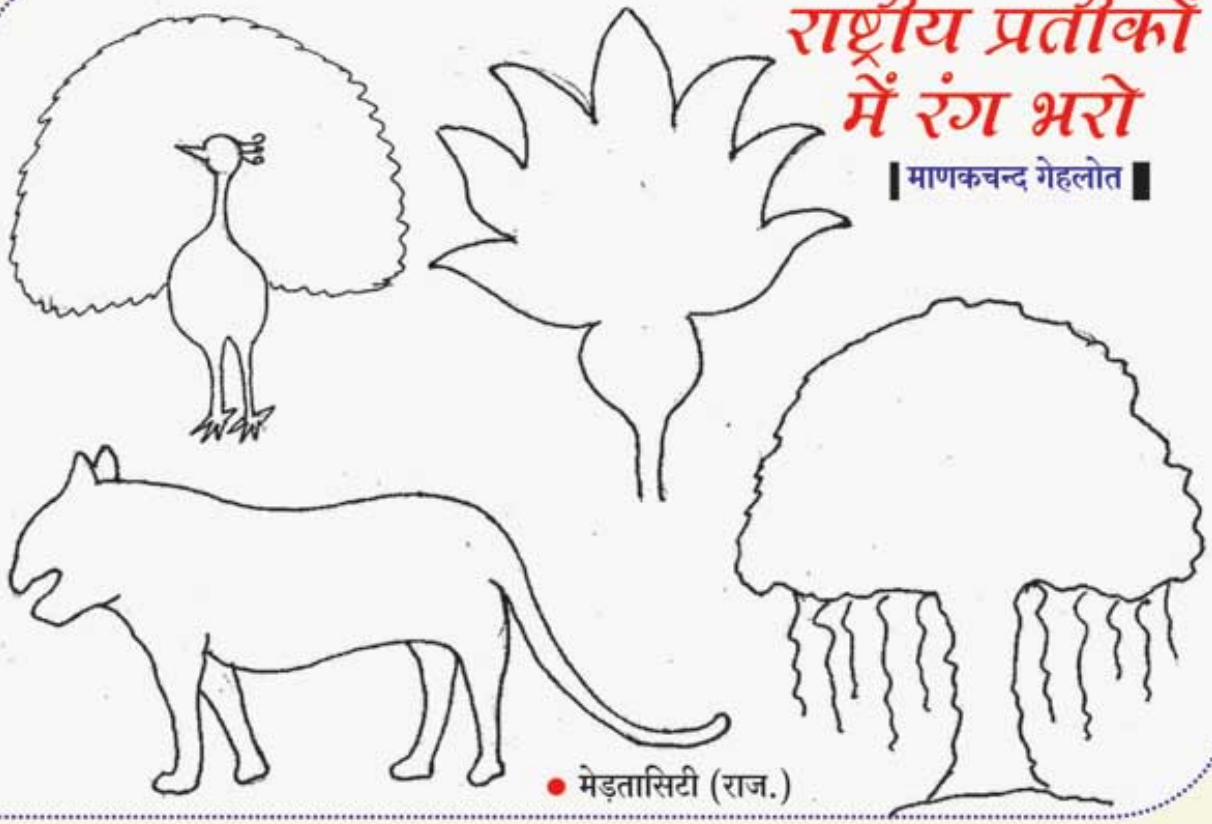

• मेड़तासिटी (राज.)

रजकण माथे का चंदन है

।कविता : डॉ. मधुसूदन साहा।

अपनी जननी के चरणों का
रजकण माथे का चंदन है।
इसका हर उत्कर्ष हमेशा
भरता मन में हर्ष हमेशा
माटी का कण-कण सिखलाता
जीवन में संघर्ष हमेशा
इसकी ही रक्षा में अर्पित
मेरा सारा तन-मन-धन है।
धूप उतरकर रूप निखारे
सागर का जल पाँव पखारे
कितने मोहक-मनहर लगते
शान्त झील-में नभ के तारे
नदियाँ कितनी सुन्दर लगती
कितना निर्मल गगनांगन है।
फूलों की सुरभित फुलवारी
विहँस रही है क्यारी-क्यारी
खेतों में खिल-खिल करती है
पीली सरसों प्यारी-प्यारी
मधुबन में पीताम्बर ओढ़े
कान्हा का यह वृन्दावन है।
देश हमारा कितना पावन
कण-कण इसका है मन भावन
हरी पत्तियों को नहलाता
वर्षा ऋतु में आकर सावन
मेरी साँसों की हर धड़कन
हर पल करती अभिनन्दन है।

● राउरकेला (उड़ीसा)

मेह बाबा आजा रे

गीतिरूपक : सुरेन्द्र अंचल

(किसान बालिका, हाथ में पूजा–थाल लिए आती है। शेष बालक, बालिकाएं हाथ उठाए, झूमते–घूमते रहते हैं।)

कृषक बाला (नृत्य मुद्रा) – ....आ....जा...रे..!
बादलों के राजा आजा!
अमृत–सा पानी बरसा जा!
महका दे माटी का तनमन!
लहर लहर नदियां लहरा जा!
आजा राजा, आ...जा...रे...!

समवेत – मेह बाबा आ...जा...रे...!

कृषक बाला (भोग लगाती ह) –...राजा, तुझको भोग लगाऊँ..

नेपथ्य – (मीठी ध्वनि)– ...काले बादल पानी दे।
पानी दे...गुड़ धानी दे।

(एक ओर से दो बालक आते हैं। दूसरी ओर से दो बालिकाएं आती हैं।)

एक बालक (अभिनय) – मेह बाबा आ....जा....रे।
सब की प्यास, बुझा..जा..रे।

एक बालिका (अभिनय) – लम्बे दिन और छोटी रातें–
छुट्टी के दिन अब ना भाते–
हांफे टेसू....तूझे बुलाते।
दूसरा बालक – आ....जा...
कुम्हले फूल खिला जा ..रे...

समवेत – मेह बाबा आ....जा....रे...

एक बालक – आ झूमता ले पुरवैया–
लहरे नदियां, ताल–तलैया!
हो....हो हैया.....ता ती थैया!
मस्त नाच ले....गंगा मैया!
हाँ....आ झूमता ले पुरवैया!

बालिका (मुद्रा) – गरज बजा तू बा...जा...रे!

समवेत – आ...जा....!
मेह बाबा आ...जा...रे...!

(मेघ गर्जना, बालक बालिकाएं आकाश में देखते है। मंच पर कभी लाल, कभी हरी रोशनी होती है।)

नेपथ्य (बिगुलनाद) – तुतडू ...तू...! तूतडू...
तूतडू.... तू...!

(पीताम्बर पहने गले में, हाथों में, जूड़े में, कमर में, फूल मालाएं– प्रवेश)

इन्द्र (प्रवेश) – मैं इन्द्र हूँ.....! मेघों का राजा...बरसात ले कर आया ताजा!
लो, भू को सरसाने आ गया!
मैं आ गया! मैं आ गया!

एक बालक (नारा) – बादलों की पालकी...!

समवेत – जय इन्दर लाल की..!

पात्र
एक कृषक / दो बालक
दो बालिकाएं / एक कृषक बाला
मेघों के राजा –इन्द्र / दो बादल बने बालक

अच्छी, अच्छी चीज खिलाऊँ!
पुरी निकालूं, खीर बनाऊँ.....
तुझको, गरमा–गरम जिमाऊँ!
दाल, ढोकला, खा जा रे!

बालिकाएं – मेह बाबा आ.....जा....रे...!

(इन्द्र आशीष की मुद्रा में खड़ा हो जाता है। मेघ गर्जना के साथ काले वस्त्रों से ढके दो बादल– बालक आकर इन्द्र के सम्मुख हाथ जोड़ खड़े, हो जातें हैं। बालक एक ओर, दूसरी ओर बादल खड़े ठुमके लगाते रहते हैं।

एक बालक (भयभीत) – अरे रे रे.....तुम कौन?
काले भतुलें से तुम कौन?
गड़ड़....गरज रहे, तुम कौन?

एक बालिका (भयभीत)– काले काले, नन्हे बौने.....?
कौन हो तुम, बड़े सलौने?
गरज रहे हो गड़ड़ क्यों?
करते हो क्या जादू टोने?

बादल (अभिनय) – मेघों के प्यारे छौने....
हम बड़े सलौने!
अब लगेगी, आसमान से वर्षा होने!

एक मेघ– हाँ रे टीना, खुशबू, हर्षल!
हम बादल हैं, हम है बादल
हमें देख खुश कृषकों के दल,
हम उनको देंगें, निर्मल जल।

दूसरा मेघ – हाँ मेघों के प्यारे छौने
हम बहुत सलौने!

इन्द्र (बिगुलनाद) – जाओ कह! दो कृषकों से....
लग जाए खेतों को बोने!
अब लगेगी आसमान से वर्षा होने!
(इन्द्र का प्रस्थान)

मेघ (अभिनय) – हाँ रे टीना, खुशबू...हर्षल...!
हम बादल हैं– हम हैं बादल !
हम मदमाते पानी लाते....
मोर नाचते–हमें रिझाते!
मेंढक बिरदावली सुनाते!
छा जाएंगे दल के दल....
हम बादल हैं, हम हैं बादल !

बालिकाएं (नृत्य) – वाह बादल भैया!
सच, मेघों के प्यारे छौने.....
तुम बड़े सलौने!

बालक (दर्शकों से) – अरे...रे...रे...! देखो...देखो!
हल जोत कर लगे,

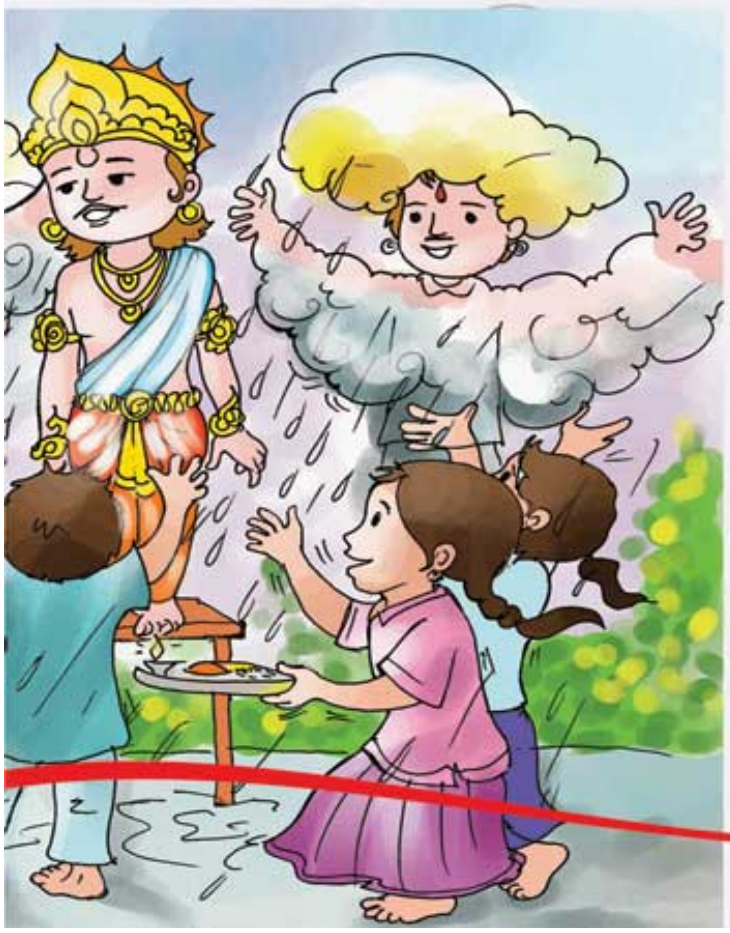

कृषक खेतों को बोने।
सचमुच लग गई,
आसमान से वर्षा होने।

एक बालक – वाह! लू भागी, पुरवाई आई!
पेड़ हंसे, लतिका मुस्काई!

दूसरा – लो देखो, कूद रहें हैं बन्दर भाई...

(अभिनय) **फिसली मीना–**
दोनों मेघ (बताशे फेंक कर)

छाई भाई!
लो, हाथों में भर लाए!
हम ओलों के दौने!
मेघों के प्यारे छौने
हम बहुत सलौने।

बिगुलनाद (पर्दा गिरता है)

● ब्यावर (राज.)

त्रिकोण

कहानी : लक्ष्मीनारायण भाला 'लच्छू भैया'

देखो वह घर की छत देखो
तीन हैं कोने बना त्रिकोण।
पहाड़ की चोटी त्रिकोण है
मुकुट शीश पर बना त्रिकोण।
फल में एक सिंघाड़ा देखा
और समोसा बना त्रिकोण।
कोने तीन रहे मिल जुलकर
तब बन जाता एक त्रिकोण।।
अखंड भारत का यह पश्चिम
और दक्षिण भी बना त्रिकोण।
राणा का भाला त्रिकोण है
मंदिर पर ध्वज बना त्रिकोण।।
हम भी तीन अलग जब बैठे
भुजा पकड़ लो बने त्रिकोण।
बिखरे तीन बिन्दु जो जोड़े
वही त्रिभुज है वही त्रिकोण।।

● भोपाल (म.प्र.)

(हरियाली अमावस्याः २ अगस्त)

शांति निकेतन का वृक्षारोपण पर्व

प्रसंग : श्यामसुन्दर सुमन

रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक महान कवि, कलाकार, शिक्षाविद् एवं मानवता के पुजारी थे। उन्होंने शांति निकेतन को एक ऐसा स्थान बनाया, जहां पहुंच कर मनुष्य अपने को सामाजिक कमजोरियों से कुछ ऊपर अनुभव करने लगता है।

जीवन के कुछ कार्य ऐसे होते हैं यदि उनको कवि अथवा कलाकार के अनुरूप बनाया जाए तो वे उल्लास व उमंग में परिवर्तित हो जाते हैं। शांति निकेतन में ऐसे अनेक उत्सव व पर्व मनाए जाते हैं, जो ऋतुओं व मौसम पर आधारित होते हैं जैसे शीतऋतु में वृक्षारोपण पर्व, पौष मेला, माघ मेला, गर्मी में वैशाख मेला। बच्चों को अपनी कृतियों को बेचने के लिए आनन्द मेला आदि पर्व भी समय-समय पर आयोजित होते हैं।

वृक्षारोपण पर्व प्रथम सत्र का प्रथम पर्व होता है। इसके लिए किसी उपयुक्त स्थान पर किसी उपयुक्त अतिथि को निमंत्रित किया जाता है। जिस स्थान पर वृक्ष लगाने का आयोजन होता है, वहां एक गड्ढा खोदकर उसके चारों तरफ अल्पना बना दी जाती है। जिस वृक्ष के पौधे का रोपण होना होता है, उस पौधे को वहां ले जाने के लिए छात्र-छात्राएं मिलकर एक डोली बनाते हैं, उसे पुष्प व फलों से सुन्दर सजाते हैं और फिर उसमें पौधे को रखा जाता है।

कुछ छात्र जो इस डोली को उठाकर ले जाते हैं, वे श्वेत वस्त्रों में सुसज्जित होते हैं। कुछ छात्राएं जो सफेद साड़ी व पीली चादर में सजी-सवरीं होती हैं, वे डोली के पीछे चलती हैं। उनमें किसी के हाथ में शंख, तो किसी के हाथ में फूल-मालाएं, अगरबत्ती, चंदन आदि होते हैं।

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर के वर्षाऋतु के गीतों की झंकार के साथ-साथ शोभायात्रा धीरे-धीरे आगे बढ़ती है। अपने स्थान पर पहुंच कर सब लोग अपना-अपना स्थान ले लेते हैं। कुछ मंत्र-पाठ, धूप-दीप आदि के उपरांत शंखनाद के साथ-साथ मुख्य अतिथि को माला पहनाकर उनसे वृक्षारोपण का आग्रह किया जाता है। वर्षा ऋतु के कुछ गीतों के बाद उत्सव समाप्त हो जाता है।

पेड़ लगाना एक महान कार्य है, जिसे कवि की कल्पना ने नया रूप दे दिया। कवि के साथ-साथ उन लोगो का भी उतना ही महत्व है, जिन्होंने कवि की कल्पना को साकार रूप देने में सहयोग प्रदान किया। इस प्रकार से छोटे-छोटे कार्यों को उत्सव का रूप देने से सृजनात्मक व आनन्दमयी वातावरण बनाया जा सकता है। आपके मोहल्ले के बगीचे, घर के या शाला आंगन में भी मन सकता है ऐसा भव्य वृक्षारोपण पर्व।

● भीलवाड़ा
(राज.)

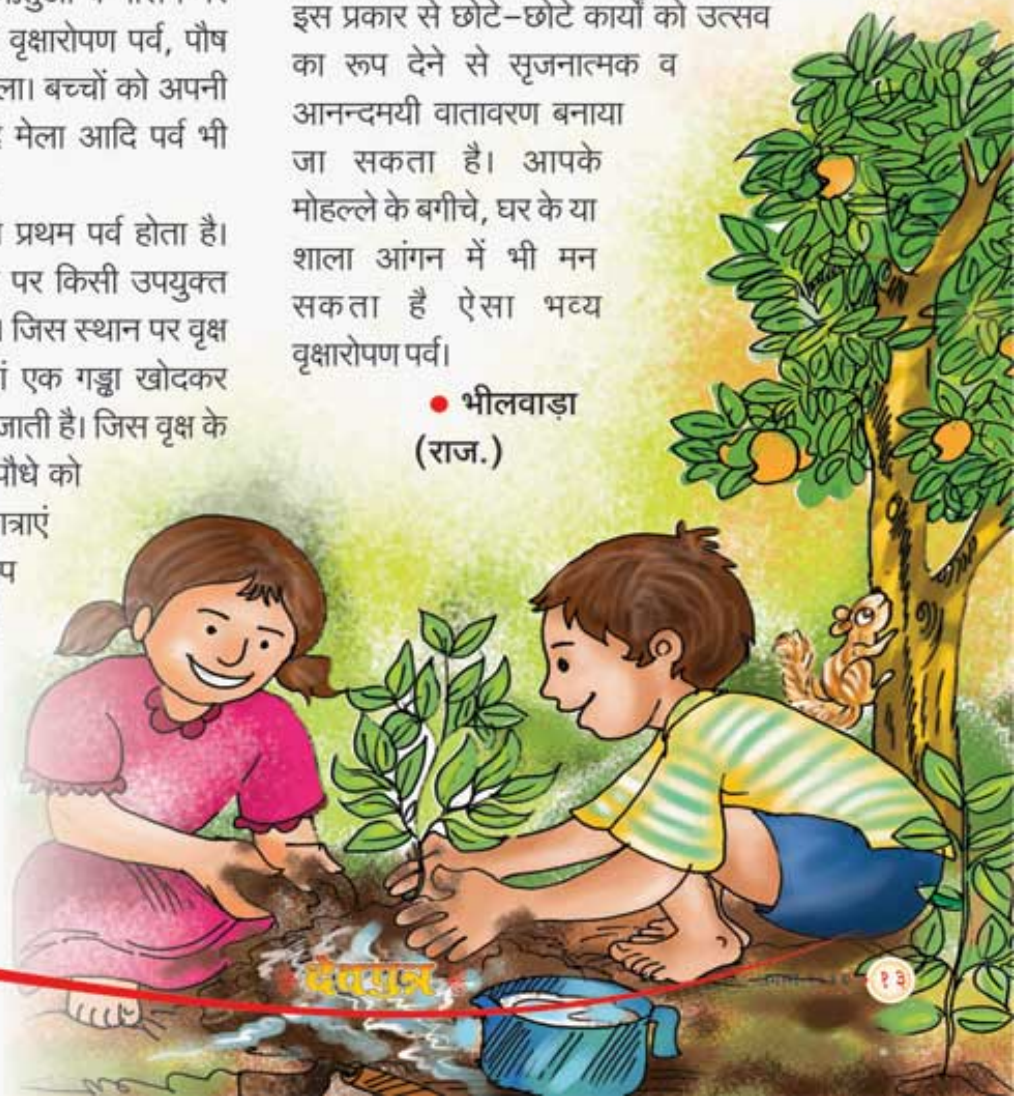

मातृभूमि प्रिय मेरी

कविता : सोमदत्त त्रिपाठी

जिसके शुचि हिम धवल मुकुट को झुक-झुक कर नभ चूमे,
जिसकी चरण-रेणु[1] रख सिर पर, सागर गर्वित झूमे,
युग, मन्वन्तर, कल्प कोटि शत, जिस पर आए, बीते,
जिसके ज्ञान-मनुजता-पय से, भरे जगत-घट रीते,
जिसको प्रकृति सजाती पल-पल, बनी अहर्निश चेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जिस पर उतरा वेद-ज्ञान का पावन प्रथम सवेरा,
जिसने अपने अंग-अंग से, चिर मातृत्व बिखेरा,
जहाँ आर्षग्रन्थों में गुम्फित[2], वेदान्तीय गहराई,
जिसने वसुधा में कुटुम्ब की भाव-भूमि ठहराई,
बिछी जहाँ तारक-तीरों से, कल्मष निशा[3] अंधेरी
वह चिरवत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जहाँ मूल्य पर मर मिटने की, वृत्ति सहज संस्कारी,
अनय दनुजता गई जहाँ पर युग-अनुयुग[4] संहारी,
जहाँ न टिकतीं अधम वृत्तियाँ, आसुर-अत्याचारी,
खेला करते जिसकी रज में, प्रभु भी बन अवतारी,
प्रेम-प्रतिपदा जहाँ मिटाती, द्वेष अमा-तम[5] घेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जहाँ सत्य-व्रत-निष्ठा-निष्ठित, अब भी हैं नर नारी,
जहाँ स्वीय सर्वस्व त्याग कर, बनते नृपति भिखारी,
जहाँ लोक-हित को महत्व दे, जन तजते गृह-नारी,
हैं नर से बनते नारायण, जहाँ मनुज-संसारी,
'अतिथि बुभुक्षित देवो भव' की जिसने पद्धति हेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जहाँ अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांचि, अवन्ती,
और सातवीं पुरी द्वारका, मोक्षप्रदा, यशवन्ती,
वन्दनीय है जहां कुलाचल, सत्कारित सरिताएँ,
जहाँ पूजनीया देवी सम, कन्याएँ-वनिताएँ,
तरु, तृण, वीरुध[6], धरा, धेनु पर आस्था जहाँ घनेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जहाँ सनातन मर्यादाएँ, प्राण-पुष्प विकसातीं,
जहां अहिंसा, करुणा, समता, पौरुष को सरसाती,
युगधर्मी आदर्शों का है, लगा जहाँ पर मेला,
जहाँ जगत की अहिगति पर भी चलता पथिक अकेला,
जहाँ ईषणाँ, घृणा, ईर्ष्या, लगा न पाती फेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जहाँ नदी क्या? सिन्धु बाँधने की है नर में क्षमता,
जहाँ शत्रुता पर जय पाते, शील, सत्य, व्रत, दृढ़ता,
अहं और मद जिससे हारे, नैतिकता के रण में,
फलीभूत नर होता पग-पग जहाँ स्वार्थहत प्रण में,
जहाँ लज्जिता हो झुक जाती अरि की आँख तरेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

जली हुई हैं जहाँ आज भी, अग्निहोत्र-मख वेदी,
सत्य शील के व्यूह दुर्ग है, अब भी जहाँ अभेदी,
उठती हाथ थाम कर जिसका, प्रगति विधायी परियाँ,
जिसने जोड़ी है वसुधा में, दृढ़ कौटुम्बिक कड़ियाँ,
जिसे आत्मवत् अखिल सृष्टि पर, हार्दिक प्रीति घनेरी
वह चिर वत्सल भारत माता, मातृभूमि प्रिय मेरी।।

● भोपाल (म.प्र.)

१ चरण रेणु=पैरों की धूल, २ आर्षग्रंथों में गुंफित= प्राचीन ग्रंथों में गुंथी, ३ कल्मष निशा=पापों की रात लिखी ४ युग-अनयुग =एक के बाद दूसरा युग, ५ अमा-तम=अमावस्या का अंधेरा, ६ वीरुध=वृक्ष, ७ ईषणा=ईच्छाएं, कामनाएं ८ अग्निहोत्र मख-वेदी= घरों में नित्य होने वाले हवन का कुण्ड, ९ प्रगति विधायी=प्रगति का मार्ग बनाने वाली

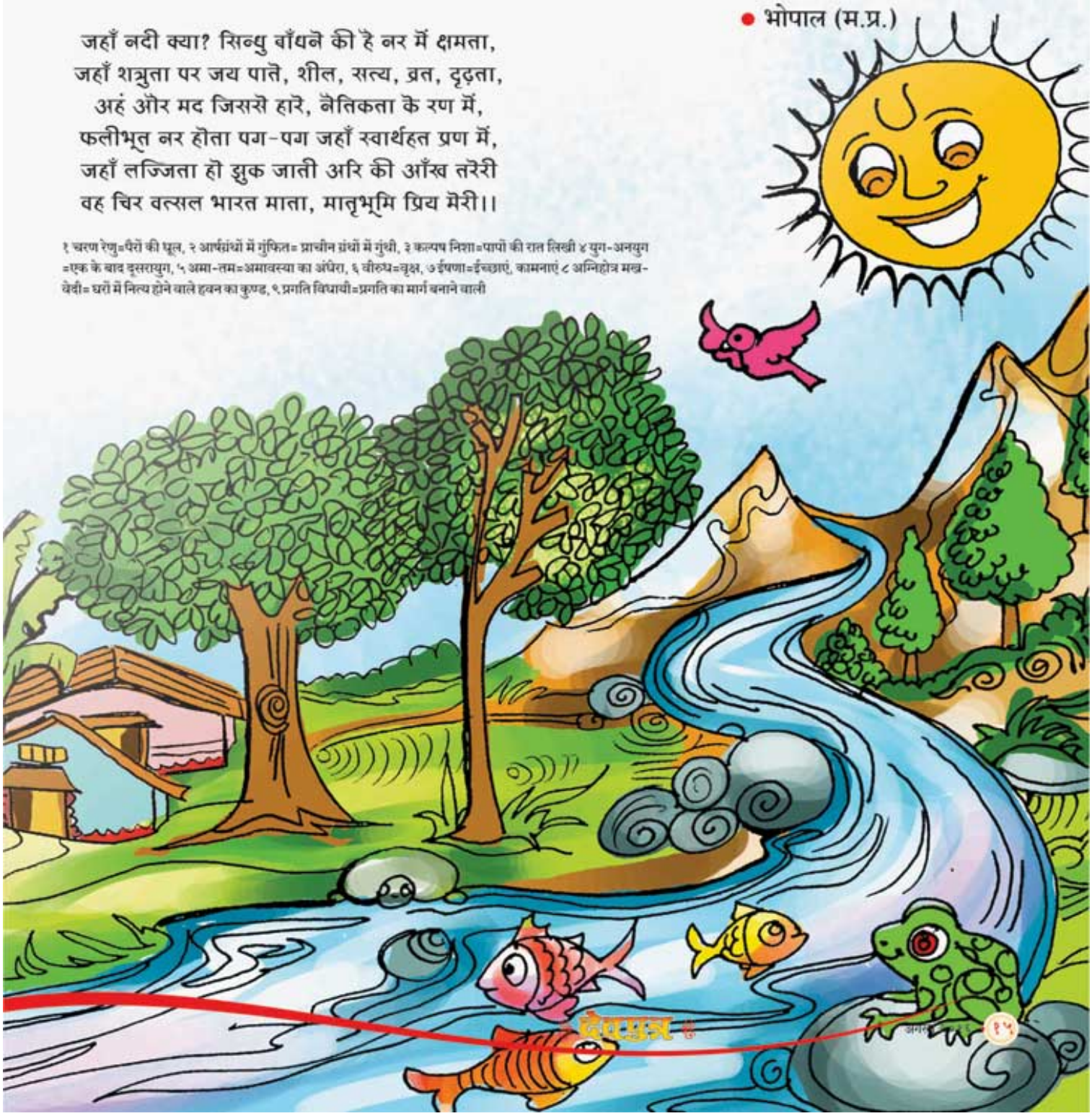

सबका

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

रक्षाबंधन का पावन पर्व। सुरेखा का मायका इसी शहर में होते हुए भी काफी दूर था। यह भाई को राखी बांधकर जल्दी लौट आना चाहती थी ताकि पतिदेव की बहन जब उन्हें राखी बांधने पहुंचे तो वह उसका घर में स्वागत कर सके। यही कारण था कि पतिदेव सुरेखा के साथ नहीं जाना चाह रहे थे। जल्दी जाने–आने की गरज से सुरेखा ने बस के बजाय ऑटोरिक्शा से जाने का निश्चय किया।

दोनों बच्चे साथ जाने के लिए पीछे पड़ने लगे तो सुरेखा ने उन्हें भी साथ ले लिया। घर के नजदीक के चौक से रिक्शा शीघ्र मिल गया। मायका कम घनी बस्ती वाले क्षेत्र में था इसलिए सब रिक्शेवाले वहां जाने को तैयार नहीं होते थे क्योंकि वापसी में सवारी मिलने में दिक्कत होती थी इसलिए कई रिक्शाचालक दोनों तरफ का किराया मांग लेते थे। सतर्कता रखते हुए सुरेखा ने पूछ लिया– '' विष्णपुरी चलेंगे सरदार जी?'' ''अवश्य चलूंगा''– तपाक से चालक ने उत्तर दिया। ''चाचा जी! हम दोनों तरफ का नहीं केवल एक तरफ का किराया देंगे। ''बेटे नीरज ने समझदारी प्रदर्शित करते हुए मोल–भाव करना चाहा। सरदार जी मुस्कुराकर चुप रह गए, सुरेखा ने इसे मौन स्वीकृति समझ लिया।

रिक्शा थोड़ी ही दूर चला होगा कि सुरेखा को याद आया...जल्दी जल्दी में वह मिठाई का डिब्बा तो मेज पर भूल आई। ''क्या माँ! आप भी इतनी जरूरी चीज घर भूल आई। रास्ते में रुककर लेंगे तो कितनी देर रिक्शा रुका रहेगा, प्रतीक्षा का किराया भी हमारे सिर पड़ेगा''–बेटी करुणा ने उलाहना दिया। ''अब पता नहीं कैसे भूल गई, चलो जाने दो– ''सुरेखा ने खिसियाते हुए पश्चाताप प्रकट किया।

सरदार जी ने सब सुन लिया था इसलिए स्वविवेक से एक मिठाई की दुकान पर रिक्शा रोक दिया। सुरेखा ने उतरकर तुरंत मिठाई खरीदी और रिक्शे में आकर बैठ गई। थोड़ी और आगे बढ़े तो एक जगह यातायात रुका था, काफी समय वहां बर्बाद हो गया। ''लो माँ! किराया और बढ गया, इतनी देर मीटर तो चालू रहेगा''–नीरज ने चिंता व्यक्त की। ''क्या फायदा हुआ रिक्शे से आने में, समय की बचत भी नहीं हुई और किराया भी दुगुना देना पड़ेगा। कम से कम सौ रुपए लग जाएंगे, देखना।''– करुणा ने चिंतापूर्वक कहा।

घर के नजदीक पहुंचे थे कि एक पहिया फुस्स से पंचर हो

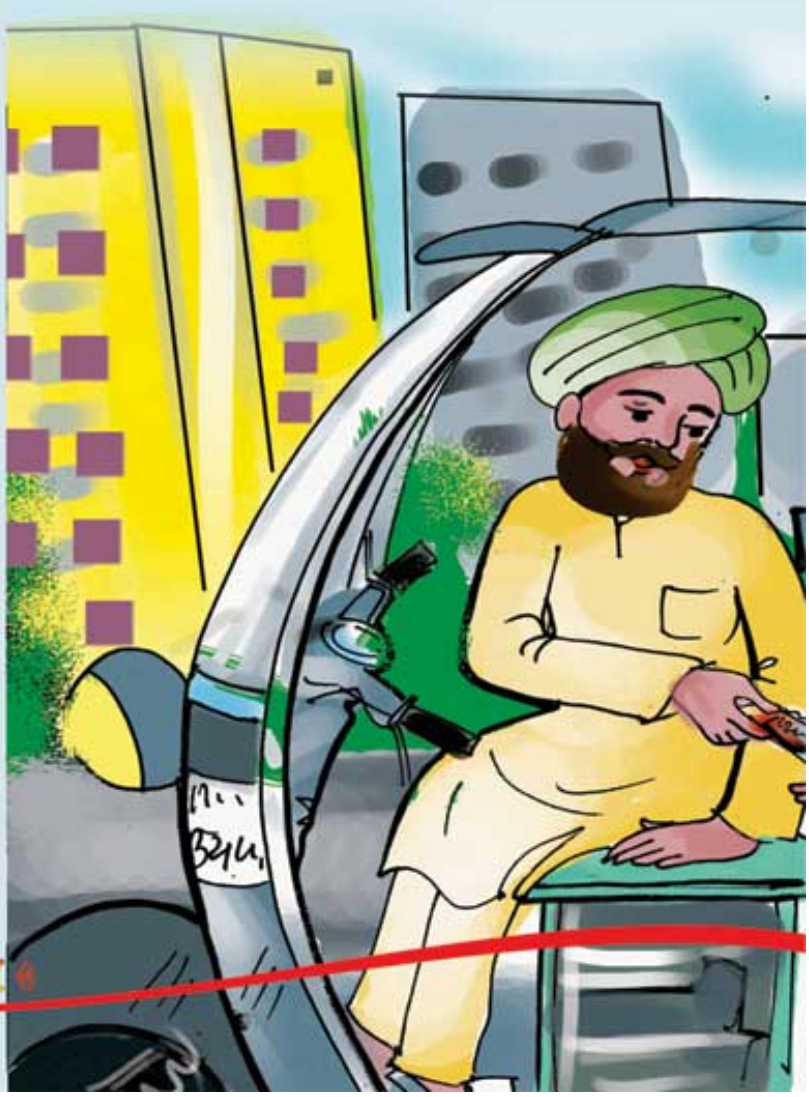

भाई

गया। सुरेखा के मुखमंडल पर परेशानी के भाव गहरा गए– ''लो इसको भी अभी पंचर होना थी आज क्या हो रहा है, देर पर देर हो रही है।'' ''आज तो माँ! अच्छे लुट गए'' –नीरज बोला। सरदार जी ने उनकी मनःस्थिति भांपते सहानुभूति दर्शा दी। ''ज्यादा समय नहीं लगेगा स्टेपनी बदलने में बस ज्यादा से ज्यादा पांच मिनट।'' चाचा जी इसका विलम्ब शुल्क हम नहीं देगे यह आपकी गलती से भी हो गई'' करुणा ने चेतावनी के स्वर में कहा। ''हमें देरी भी हो गई आपकी वजह से''–नीरज ने सुर में सुर मिलाते सरदार जी को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की। सरदार जी कुछ नहीं बोले पूर्ववत् ओठों पर मुस्कराते रहे।

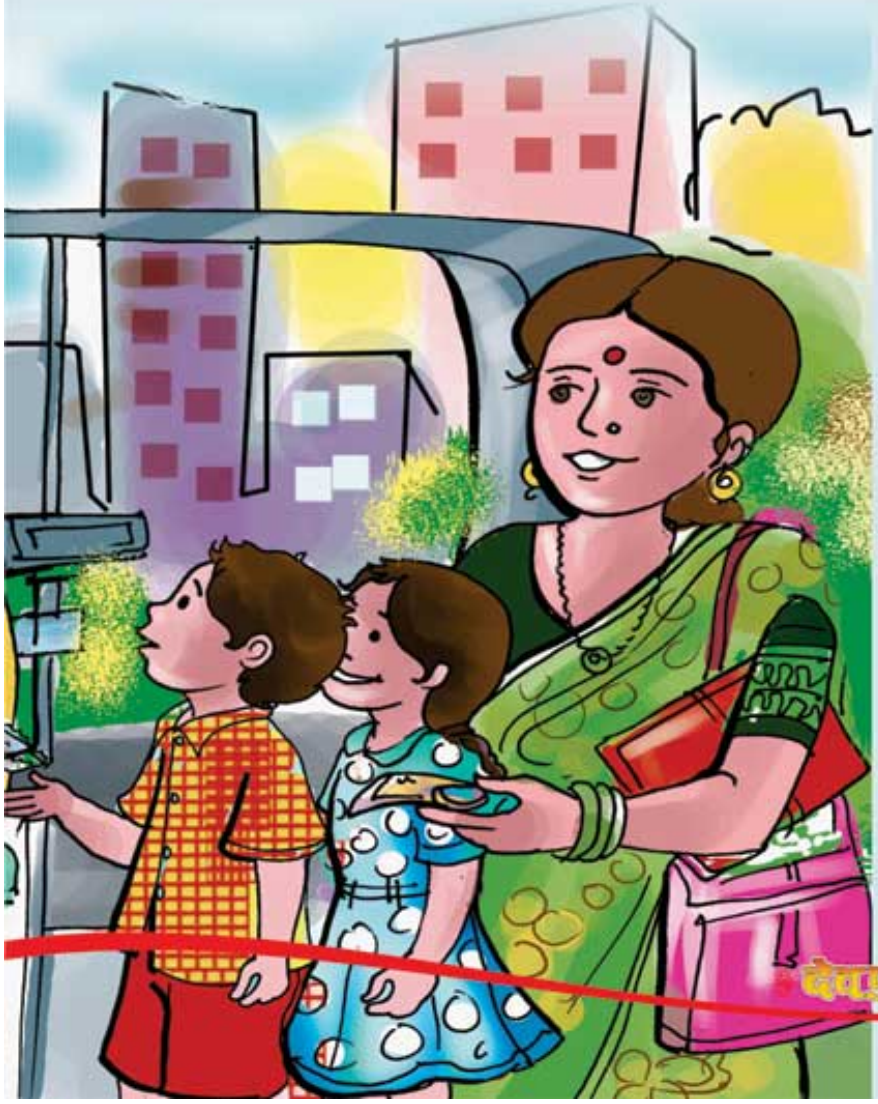

अंततः गंतव्य पर पहुंचकर सुरेखा ने राहत की श्वास ली, देर आए दुरुस्त आए। बटुआ निकालते हुए उसने पूछ लिया– ''कितने पैसे हुई भाई साहब?'' बेटी करुणा का ध्यान बंद मीटर की तरफ गया तो चौंकते हुए बोले–''यह क्या चाचा जी! मीटर तो आपने चालू किया ही नहीं, ज्यादा पैसे ऐंठना चाहते हैं?'' ''हमें पहले ही देख लेना था अब देना पड़ेंगे मनमाने पैसे, अधिकतर रिक्शेवाले ऐसे चालाकी करते हैं!''–नीरज ने पश्चाताप प्रकट किया।

''कितने पैसे दूं?''– व्यग्रतापूर्वक सुरेखा ने दोहराया, देर हो रही थी, सरदार जी मुस्कुराते हुए बोले–''आज मैं बहनों से पैसे नहीं लेता, आज राखी का त्यौहार है।''

सुरेखा हतप्रभ रह गई। नीरज करुणा अपने कथनों पर लज्जित होने लगे...पता नहीं गुस्से में क्या–क्या आरोप लगा दिए थे। ''बड़े प्यारे भांजा–भांजी हैं, यह इनके लिए''– कहते हुए अपने जेब से दो बड़े चाकलेट बच्चों को थमा दिए। ''धन्यवाद चाचा जी! धन्यवाद, क्षमा करें चाचा जी! ''दोनों बच्चे एक साथ बोल पड़े। ''चाचा नहीं मामा''–सरदार जी ने सुधार किया तो दोनों बच्चे हंस पड़े।

इस अहसान का बदला कैसे चुकाया जाए दुविधाग्रस्त सुरेखा सोच रही थी कि सरदार जी गाड़ी चालू करने लगे। ''रुकिए मुंह मीठा करके जाइए'' सुरेखा ने मिठाई का डिब्बा निकालते हुए कहा। '' ''नहीं फिर कभी मुझे और भी बहनों को राखी बंधवानी है।'' कहते हुए सरदार जी तेज गति से फुर्र

बताओ कौन है छोटे से बड़ा

मातृ भू को प्राण तक थे पुष्प-से जिनने चढा
शूरता के दण्ड पर जिनकी तिरंगा है खड़ा
करने उन्हें प्रणाम आए बच्चे कई छोटे बड़े
पुष्प चक्रों में जरा पहचानिए छोटा बड़ा

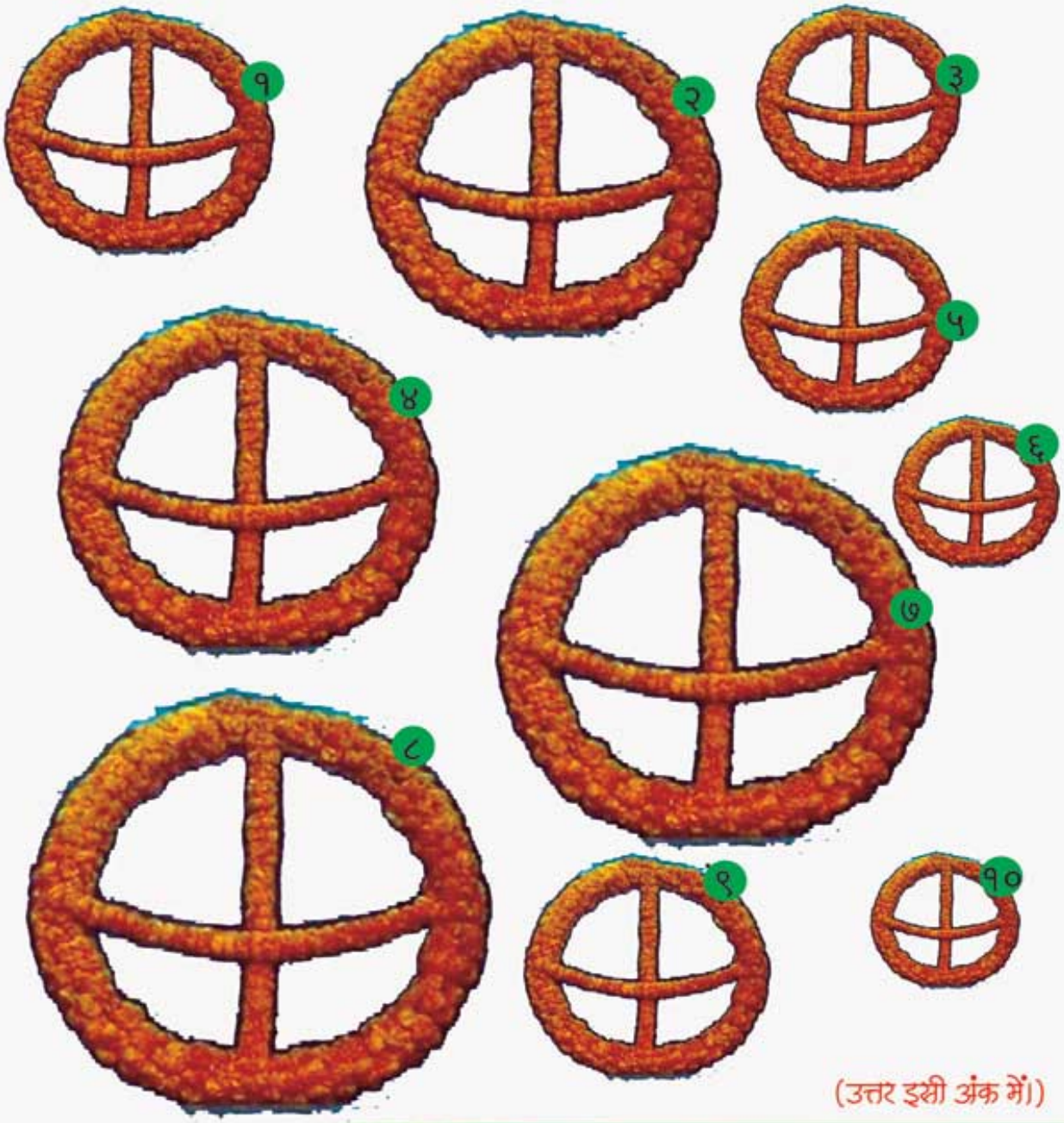

(उत्तर इसी अंक में।)

राखी का त्यौहार

कविता : डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

राखी का त्यौहार निराला।
रंग-बिरंगी राखी वाला
राखी के कच्चे धागे में
छिपा बहिन का प्यार सलोना।
महक-महक उठता भाई के
निश्छल मन का कोना-कोना।
इतना निर्मल प्यार कि जैसे
पूरित गंगा-जल का प्याला।।
चम-चम चमक रही हैं राखी
दुकानों पर कितनी सुन्दर
मिठाईयों की दुकानों पर
भीड़ हुई है कितनी जमकर
चहल-पहल हर घर आँगन है
नहीं किसी के मुँह पर ताला।।
दीदी! मेरे बाँधो राखी
और खिलाओ मुझे मिठाई
पढ लिखकर मैं बड़ा बनूँगा
और करूँगा खूब कमाई।
तब पहनाऊँगा मैं तुमको
सोने चाँदी वाली माला।।

● हरदोई (उ.प्र.)

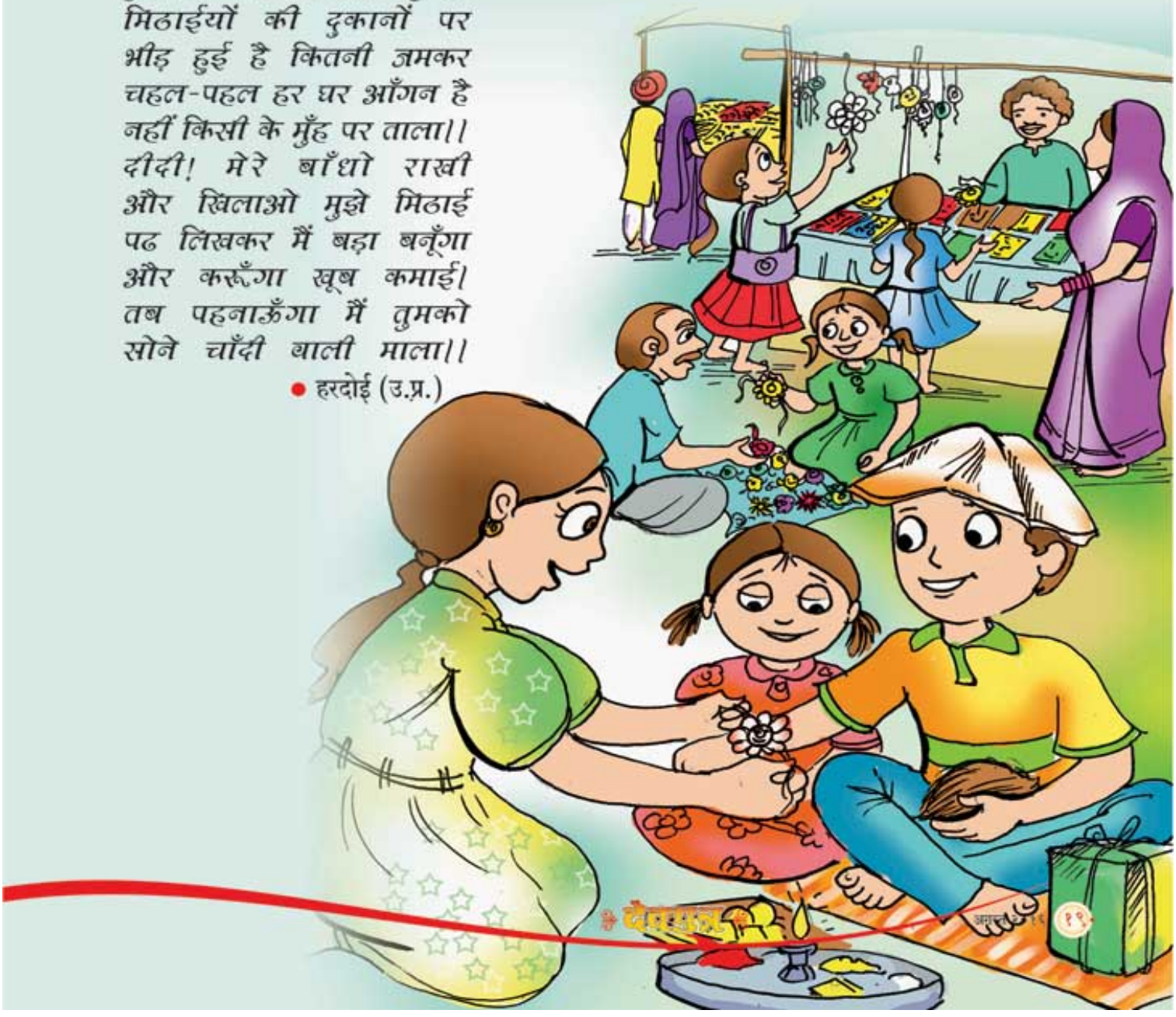

(खेल दिवस : २९ अगस्त)

खेलों का एक नया नाम
दीपा करमाकर

आलेख : संजय वर्मा

खेलों की दुनिया में भारत की दीपा करमाकर ने १७ अप्रैल २०१६ को इतिहास रच दिया जब वह ओलम्पिक के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय महिला जिम्नास्ट बन गई। दीपा करमाकर ने **रियो डि जेनेरियो** में सम्पन्न अंतिम क्वालीफाइंग और टेस्ट इवेंट में शानदार प्रदर्शन कर **रियो ओलम्पिक** का टिकट कटाया। २२ वर्षीय इस जिम्नास्ट ने कुल ५२-६९८ अंक हासिल कर अगस्त २०१६ में होने वाले ओलम्पिक खेलों की कलात्मक (आर्टिस्टिक) जिम्नास्टिक में जगह बनाई। इसके साथ ही इन्होंने वाल्ट फाइनल में स्वर्ण पदक जीतकर एक और उपलब्धि अपने नाम की।

दीपा करमाकर पहली भारतीय महिला के अलाव ५२ वर्ष लम्बे अंतराल के बाद खेलों के महाकुंभ के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय जिम्नास्ट भी है। देश को आजादी मिलने के बाद ११ भारतीय पुरुष जिम्नास्टों ने ओलम्पिक में सहभागिता की थी। जिनमें से दो ने सन् १९५२, तीन ने १९५६ एव छह ने १९६४ में भाग लिया था। उस समय कोई क्वालीफिकेशन नियम नहीं था।

दीपा को रियो ओलम्पिक के लिए क्वालीफाई करने वाली महिला कलात्मक जिम्नास्टिक में व्यक्तिगत क्वालीफायर की सूची में ७९वीं जिम्नास्ट सूचित किया गया है। दीपा ने वाल्ट में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में किसी भारतीय जिम्नास्ट की यह दुर्लभ उपलब्धि है। हालाँकि वाल्ट में स्वर्णपदक से उनके ओलम्पिक क्वालीफिकेशन पर कोई असर नहीं पड़ता था, क्योंकि कलात्मक जिम्नास्टिक में एक ऑलराउंड स्पर्धा है।

अन्तर्राष्ट्रीय रेफरी दीपक कागरा ने कहा– ''दीपा का बहुत अच्छा स्कोर था और हम निश्चिंत थे कि वह क्वालीफाई कर लेगी। अब विश्व संस्था ने भी ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाले जिम्नास्ट की

सूची जारी कर दी है और उसका नाम इसमे शामिल है। भारतीय जिमनास्टिक समुदाय दीपा की उपलब्धियों पर काफी गर्व महसूस कर रहा है।'' दीपा को टेस्ट इवेंट के लिए रिजर्व लिस्ट में रखा गया था। बीते महीने ही दीपा को यह बताया गया कि वह भारत की प्रमुख टीम में शामिल कर ली गई है। अपने चयन को साबित करते हुए दीपा ने वॉल्ट में भी मौका हासिल किया। इस इवेंट में दीपा

दीपा की सफलता पर पिता को है गर्व

दीपा करमाकर के पिता को अपनी बेटी की इस ऐतिहासिक सफलता पर गर्व है। इंफाल स्थित भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) केन्द्र में भारोत्तोलन कोच श्री दुलाल करमाकर ने कहा–''मुझे दूसरे दिन दीपा के क्वालीफाई करने की खबर मिली। मुझे इसकी बेहद खुशी है। मुझे उस दिन और अधिक खुशी होगी, जब वह ओलम्पिक में देश के लिए पदक जीतेगी।''

ऐसा कहा जाता है कि दीपा बचपन में जिम्नास्टिक में जाने की इच्छुक नहीं थी। दुलाल ने बताया–''मेरी दो बेटियाँ हैं। मैं किसी को खेल में डालना चाहता था। इसलिए मैंने जिम्नास्टिक में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया उसकी एक अच्छी बात यह है कि वह जो कार्य लेती है, उसे हासिल करने के लिए पूरा जोर देती है। इसके लिए सुझाव यही है कि वह संयम एवं निष्ठा के साथ अभ्यास करे।

ने सन् २०१५ एशियन चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता था। साथ ही सन् २०१४ राष्ट्रमंडल खेलों में भी दीपा ने इस इवेंट में कांस्य पदक जीता था।

दीपा करमाकर की इस सफलता पर भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ) की टारगेट ओलम्पिक स्कीम (टॉप्स) में शामिल किया गया है। इसके तहद दीपा को शिक्षण के लिए ३०लाख रु. मिलेगें।

दीपा करमाकर ने कॉमनवेल्थ गेम्स में कांस्य पदक जीतकर सबको आकर्षित किया था। उन्होंने अगस्त २०१५ में हिरोशियमा एशियन जिम्नास्टिक्स चैपियनशिप में भी कांस्य पदक जीता था। हालाँकि पिछले वर्ष नवम्बर में आयोजित विश्व चैपियनशिप में ओलम्पिक का टिकट पाने से चूक गई थी। फिर भी वह इस प्रतियोगिता के फाइनल तक पहुँचने वाली पहली महिला (भारतीय) जिम्नास्ट थी। इतना ही नहीं वह सबसे मुश्किल माने जाने वाली इवेंट प्रोडुनोवा वॉल्ट को सफलतापूर्वक पूरा करने वाली पाँच महिलाओं में से एक रही।

दीपा को अपने कॅरियर में पहली सफलता सन् २००७ में जूनियर नेशनल स्तर पर मिली। इसके बाद उन्होंने राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग ७७ पदक जीते। जब इलाहाबाद के जिम्नास्ट आशीष कुमार ने सन् २०१० में दिल्ली में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स में देश के लिए इस खेल में पहला पदक जीता तो दीपा के अंदर भी कुछ कर गुजरने का हौंसला जागा। अब दीपा एवं आशीष काफी अच्छे दोस्त हैं एवं एक दूसरे को काफी मदद करते हैं।

निश्चित रूप से दीपा के प्रदर्शन से भारतीय जिम्नास्टिक समुदाय ही नहीं भारतीय खिलाड़ियों में भी एक नये उत्साह का सृजन हुआ है। उक्त शानदार सफलता के लिए दीपा को सभी भारतवासियों की तरफ से बधाई।

● **गोरखपुर (उ.प्र.)**

(लेखक स्वतंत्र खेलकूद एवं विज्ञान पत्रकार है।)

खेल पुराने

कविता : सतीश मिश्र

कहां गुम गए खेल पुराने
कहां गुमी सच्चाई
क्यों आपस में लड़ते रहते
हम सब भाई-भाई
बचपन की वह हा-हा, ही-ही
छल्ल कबड्डी आले,
आंख मिचौली, गोली-गुप्पल
लंगड़ी के वह पाले।
मेल जोल का गुल्ली डंडा,
गुट्टों वाला खेल
आइस-पाइस, कहां गुम गया
वह आपस में मेल
अपने और पराये से ना
कोसों तक था नाता,
जो भी आया साथ खेलने
बन जाता था भ्राता।
अब तो खेल अकेले वाले
गेम विडियो आए,
स्क्रीनों से प्यार हो गया,
अपने हुए पराए।
है तकनीक जरूरी, पर
यदि अच्छा हो उपयोग,
तुम तो खेलों मैदानों में,
छोडो यह सब ढोंग।

● खुटार (उ.प्र.)

बच्चो! बालीवाल, फुटबाल या क्रिकेट और बेडमिंटन का नाम तो आप जानते हैं। कविता में आएं भारतीय खेलों के नाम खोजो और पता करो ये कैसे खेले जाते हैं?

शब्दक्रीडा(२०)

कान्हा तेरे कितने नाम

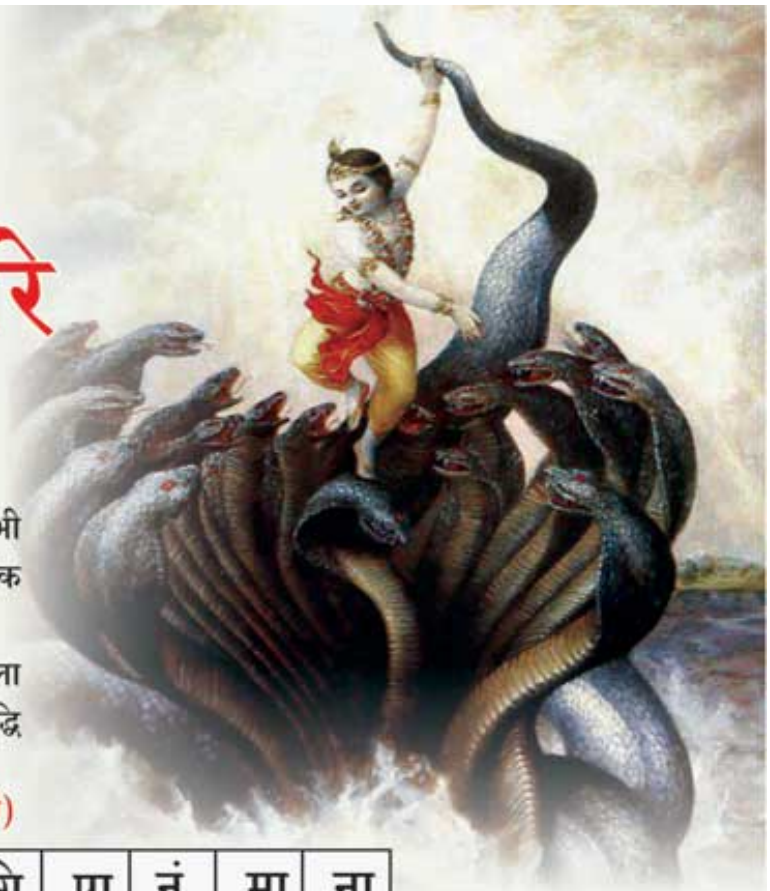

बच्चो! श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आप शब्दक्रीडा में भी मचाइए नटखट नंद किशोर के साथ धूम। आपको उनके अनेक नामों में से बचपन के १५ नाम खोजना है।

१५ नाम खोजने वाला उत्तम बुद्धि, १० खोजने वाला मध्यम बुद्धि एवं ५ नाम ही खोजपाने वाला सामान्य बुद्धि कहलाएगा।

(सही उत्तर इसी अंक में)

मा	शो	धा	व	मो	गो	री	गि	पा	नं	मा	ना
की	ख	दे	ह	ला	सु	या	म	ल	रि	से	ग
न	दा	न	य	थै	न	य	शो	दा	नं	द	न
श्या	धा	मो	चो	शो	म	श्व	थै	द	ख	रा	थै
नं	वा	द	व	र	श्री	द	ला	श्री	दा	ना	या
कं	री	न	ली	र	ना	ल	न	ल	कृ	र	ष्ण
कं	स	नि	कं	द	न	ग	चो	ल	या	ष्ण	ध
प	वा	ल	र	द	पा	मु	पा	कृ	ह	न	ग
सु	दे	की	ष्ण	ली	नं	गो	प	म	न	रि	ल
र	व	दे	ध	वा	र	न्धु	ब	ब	द	धा	ध
द	या	र	श्व	से	रा	न	थै	द	न्धु	री	ना

क्या आप इन नामों के अर्थ भी बता सकते है।

श्रीकृष्ण के १००० नामों का उल्लेख होता है आप कितने जानते है- १००, २००, ५०० कोशिश कीजिए।

(अनूदित बाल कहानी)

परोपकारी कौआ

अनुवाद : शिवचरण मंत्री

एक दिन जंगल में सुबह सुबह ढम-ढम की आवाज सुनाई दी। वन के पशु-पक्षी वृक्ष, जीव जंतु सोते हुए जाग उठे। ढोल की आवाज शनैः शनैः पास में आ रही थी। दृश्य देखकर जंगल के पशु-पक्षी, वृक्ष, जीव-जंतु आश्चर्य चकित रह गए। दृश्य देखा तो एक बंदर गले में ढोल लटकाए उसे ढम-ढम बजाते हुए आगे आगे चल रहा था और उसके पीछे साथी धीरे धीरे चल रहा था। तीसरा दृश्य देखकर सब की आँखें आश्चर्य में डूब गई। सबने मुँह में अंगुलियाँ डाल ली। आश्चर्यचकित रह गए। नया कौतुक देख आश्चर्य में डूब गए। दृश्य देखकर कई के मुँह से ये शब्द निकले- ''अरे, ऐसा होता है, कहाँ हाथी और कहा कौआ। आखिर हाथी न क्या सोचकर कौवे को हौदे में बैठाया है?''

हाथी और कौवे की सवारी आगे बढ़ी। सबको बहुत अटपटा लगा पर कोई कुछ भी नहीं बोला क्योंकि हाथी का रुतबा ही ऐसा था।

कोयल बोली-''तोता भाई! आप इतने सुन्दर, रूपाले हाथी की सवारी पर शोभित हो या कौआ?''

तोते ने तुरंत कहा-''कोयल बहन! आपकी बात अक्षरशः सत्य है। इस हौदे पर आप शोभित हो न कि कौआ?''

बगुले ने लम्बी गर्दन करके कहा-''मेरी बात तो जाने दें पर हौदे पर तो हंस भाई! आप सुशोभित हो।''

हंस ने कहा- ''बगुला भाई! आपकी बात सच है पर मेरी अपेक्षा तो यह सुन्दर मोर हौदे पर शोभित हो।''

बरगद के नीचे खड़े हिरण ने चर्चा में भाग लेते हुए कहा- ''पक्षियो! आपकी बातें मानने जैसी हैं पर मैं तो सोचता हूं कि हमारे जंगल के राजा यदि हाथी के हौदे पर बैठे तो जंगल की शोभा में चार चांद लग जाए।''

सबने हिरण की बात का समर्थन किया तो गधे से रहा नहीं गया। उसने कहा-''पर भाइयो! इस तरह यदि कौवे की हाथी के हौदे पर रोज सवारी निकलती रही तो जंगल के राजा शेर की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाएगी।''

कौवे की कट्टर शत्रु कोयल ने टहूका किया- ''तो अब किसकी प्रतीक्षा करनी है? चलो हम राजा के पास फरियाद करते हैं।'' सभी ने कोयल की बात का एक स्वर में समर्थन किया और कहा- ''हाँ...हाँ... चलो, ऐसे शुभ काम में ढील नहीं हो।''

और जंगल के सभी वृक्ष, पशु-पक्षी और जीव जन्तु सिंह के पास पहुँचे। शेर अपने दरबारियों के साथ दरबार में बैठे थे। यकायक जंगल के सभी प्राणियों को एक साथ आया देख उनकी आँखें लाल हो गईं। मुख मुद्रा कठोर हो गई। राजा को कठोर मुद्रा में देख सब डर गए और अधिकांश जीव-जंतु, पशु-पक्षी बरगद के पीछे छिप गए। सभी पशु गर्दन झुकाए मौन खड़े रहे।

''कैसे आए हो?'' राजा ने दृढ़ स्वर में पूछा तो सबके मुँह सिल गए। अंततः बरगद दादा ने कहा-'हमने एक कौतुक देखा।'

''कौतुक! कैसा कौतुक देखा?'' राजा ने आश्चर्य से पूछा।

''महाराज! एक बंदर ढोल बजा रहा था। उसके पीछे हाथी था। हाथी के हौदे पर कौवे की सवारी थी। कौआ बड़े राजसी ठाठ से हौदे पर बैठा था।'' बरगद ने उत्तर दिया।

''क्या कहा? हाथी के हौदे पर कौआ? हाथी को ऐसा विचार कैसे आया। हाथी को दरबार में उपस्थित करो।'' राजा की आज्ञा होते ही दूत चारों दिशा में दौड़ पड़े।

कुछ देर में हाथी, बंदर और कौवे को दरबार में लाया गया। राजा ने गुस्से में हाथी से पूछा- ''प्रजा कहती है कि तूने कौवे को हौदे पर बैठाया?'' ''जी श्रीमान्!'' हाथी ने विनम्रता से कहा।

''हाथी! तुम पर प्रजा का आरोप है कि-क्या तुम्हे कौवे के सिवाय ऐसा कोई अन्य पशु-पक्षी नहीं मिला जो हौदे पर बैठने योग्य हो?'' प्रधान बघिरा ने आरोप सुनाया।

''श्रीमान्! पहली बात तो यह है कि यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। मुझे यह निर्णय करने का पूरा अधिकार है कि मैं

किसे हौदे पर बैठाता हूं या नहीं बैठाता हूँ। यह जंगलवासियों का विषय नहीं है। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि मैंने ऐसा करके कौन सा अपराध कर दिया?'' हाथी ने चीखकर कहा।

''सच और झूठ का निर्णय करना राजा का काम होता है। अतः ठीक तरह से बात करो हाथी भाई!'' प्रधान ने गुस्से में कहा।

''मेरी बात को अन्यथा न लेकर मुझे क्षमा करें कि कोयल का अपने अण्डे कौवे के घोंसले में रख देना क्या न्याय संगत बात है? ''दूसरी बात जंगली पशु निर्दोष हिरण, गाय, भैंस, नील गाय जैसे पशुओं का शिकार करते हैं क्या यह न्याय संगत है?'' हाथी ने गर्जना की।

हाथी की गर्जना सुनकर सभी जंगल की प्रजा स्तब्ध रह गई। किसी के पास हाथी के इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं था।

मौन तोड़ते हुए कौवे ने कहा– ''श्रीमान्! हमारी कौवे की जाति पीढ़ियों से कोयल का अन्याय सहन करती रही है

क्या यह उचित है? और आज मेरे और हाथी भाई के कोई अन्याय न करने पर भी हम पर आरोप लगाए जा रहे हैं?''

शेर ने कहा– 'हाथी और कौवे की बात सच है। पर हाथी यह तो बताए कि उसने कौवे को हौदे पर क्यों बैठाया?''

हाथी ने अत्यंत नम्रता से कहा– ''महाराज! हम कौवे के लिए जो भी मन में आए वह कहें, पर कौआ मेरे परिवार का तारणहार है। मैं इसका आभारी हूँ।''

प्रधान जी ने धीरे से कहा– ''हाथी भाई! बात को थोड़ा स्पष्ट करके बताएं।''

''महाराज! बात यह हुई! एक दिन मैं अपने परिवार के साथ जंगल में जा रहा था इस बरगद के पास ने निकल रहा कि बरगद पर बैठे इस कौवे ने मुझे सचेत किया कि हाथी भाई! तनिक रुको, इस बरगद के नीचे मौत का गड्ढा खुदा पड़ा है।'' मैं और मेरा परिवार सामने फैली मुलायम और ताजा घास चरने को बहुत ही उत्सुक थे तो कौवे ने आकर कहा–''यहाँ आपको पकड़ने के लिए गड्ढे खोद रखे हैं। घास ललचाने को जमा रखी है।'' हम रुक गए। मैंने एक वजनदार पत्थर बरगद के नीचे डाला। पत्थर धडाम की आवाज के साथ नीचे गिरा। मुझे विश्वास हो गया कि कौआ सच कह रहा है। यदि कौवे ने मुझे सचेत न किया होता तो मेरा सारा परिवार मर गया होता। बस, उस दिन से कौआ मेरा मित्र है। आज हम प्रसन्नता से जंगल में घूमने निकले तो कौवे को हौदे पर बैठाया है। बंदर हमारे बचने की खुशी में नाचा था और शिकारियों को पत्थर मार कर भगा दिया था। अतः यह भी मेरा मित्र है। यह प्रसन्न होकर ढोल बजाते हुए आगे चल रहा है।''

हाथी की बात सुनकर सबके मन में कौवे के प्रति आदर भाव जाग्रत हुआ। सब कौवे का गुण गान करने लगे। उसका अभिनंदन करने लगे। सिंह ने अतीव प्रसन्न होकर कहा– ''हाथी भाई! मैं कौवे के परोपकार का बड़ा सम्मान करता हूँ। आपकी मित्रता का अभिनंदन करता हूँ।''

हाथी की उदारता, कौवे के परोपकार और बंदर की प्रसन्नता के हर्ष भरे गीत गाते–गाते सब अपने अपने घर लौट पड़े।

● अजेमर (राज.)

(इस मूल गुजराती बाल कथा के

पहेलियाँ

गफूर स्नेही

१
आँसुओं को झेले,
काला फूल ले ले।
रोना बंद तो मुर्झाए,
फूल बड़ा शरमाए।।

२
फूलों की नदिया
बहती देखो भैया।
अनोखी बात बहे
नभ पर जैसे कनकैया।।

३
सात से ऊँचा
तीन रंग को पूछा।
सब करते प्रणाम
वह भी देता पैगाम।

४
गुब्बारे से बड़ा
भालू हाथी से जबरा।
अरे बिना पर के
तारे तोड़े अंबर के।

५
पानी में निकली
एक ज्योति जली।
बिना बात क्रोधित
भू नभ है कंपित।

६
नीची नदी में है
ऊपर बादल में।
गहरे बही है
रसातल, तल में।

● उज्जैन (म.प्र.)

(उत्तर इसी अंक में)

(भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१६ में पुरस्कृत)

हमारी बस्ती

कहानी : प्रतिष्ठा द्विवेदी

गौरेया घर बना रही थी। घर के भीतर घर, मनुष्य से परिचित थी, कई पीढ़ियों से। जैसे ही बसंत की आहट मिलती घर बनाने में जुट जाती। इर्द–गिर्द का मुआयना करती, फिर तिनके–तिनके का संग्रहण, इधर उधर से चोंच में दबा–दबा कर एकत्र करती। अपने बैठने लायक जगह पर तिनकों का बिछौना नीचे, दाएँ–बाएँ, वही है गौरेया का राजमहल। उसी में वंश वृद्धि का इतिहास रचाती।

गौरेया छोटी सी चिड़िया है। शरीर से मटमैली पर अन्दर से सुथरी। मानवों के चरित्र में सहज विश्वास करती। आँगन में बिखरे दानों से जीवन–यापन करने वाली, भोग लगे चावल के दाने चोंच में दबा कर फुर्र हो जाती। मनुष्य के समीप तक आ जाती जब मानवीय महल जहरीले नहीं थे। कोई बड़ा फल गौरेया को नहीं चाहिए, समूची रोटी वह नहीं उठा सकती। सीमित साधन, सीमित भोजन, सीमित उड़ान, सीमित पहचान असीमित विश्वास, असीमित स्नेह, असीमित सुकुमारता।

अण्डे देते–देते बीमार पड़ गई। पंखों के बाल झरने लगे। पुरातन घर में

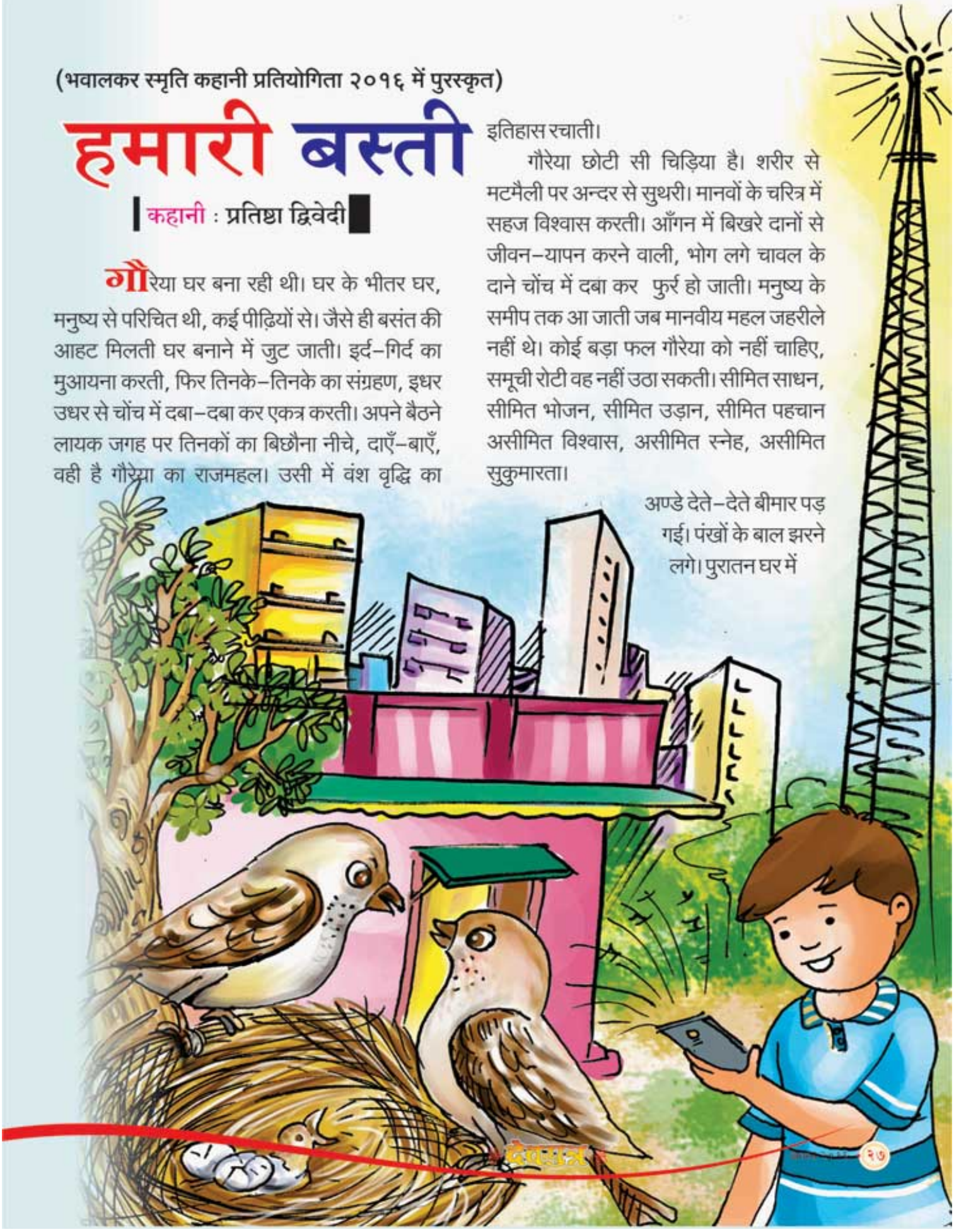

ऐसा क्या हो गया? सदा सुखी रहने वाले झरोखों के कोने जहरीले क्यों हो गए? हवा–पानी जान लेवा क्यों हो गए? मालकिन के पास चिड़िया चहक रही थी। आवाज चीं.चीं में व्याकुलता का मिश्रण था। मालकिन उस भाषा की जानकार नहीं थी जो भाषा गौरैया की है। गौरैया कह रही थी, ''मालकिन! तुम्हारा आँगन वैसा नहीं रहा, तुम्हारे घर का हवा–पानी वैसा नहीं रहा, तुम्हारी हरियाली वैसी नहीं, तुम्हारा भोजन वैसा नहीं, तुम्हारा थाली वैसी नहीं, तुम्हारा मन वैसा नहीं। यह क्या बदलाव कर दिया है। प्रकृति सब की माँ है। उसके साथ छल हो रहा है। हमारे अंडे छोटे आ रहे हैं। आपके बच्चे भी क्या नभचर हैं,उनका भी बिना धरती के कोई अस्तित्व नहीं। पर आप तो धरती में रहने वाले हैं। आपको अपनी धरती की आज भी चिन्ता करनी होगी। सच, चिड़िया से भी अधिक।'' चिड़िया चिंचियांकर फिर से घोंसले में बैठ गई, मालकिन सोच रही थी, क्या कह गई चिड़िया। पशु, पक्षी सब मानवीय संवेदना के अंग हैं। यदि पक्षी विचलित है, तो वर्षा होने वाली है या भूकंप आने वाला है या प्रलय आने वाला है या कोई संकट। यह संकट सिर्फ गौरैया का नहीं, सारे यह जीव जगत का है। गौरेया नन्ही चोंच, नन्ही आवाज से इशारा कर रही है, पर बड़े लोग छोटे लोगों की बातें कहाँ सुनते हैं। वर्जना तोड़ना जैसे आनन्ददायी खेल हो चुका है।

गौरैया के नर साथी ने बताया ''हमसे भूल हुई। अब यह घर सुरक्षित नहीं रहा। जहाँ आँगन में तुलसी दिखा करती थी, वहीं मोबाइल का टावर लग गया है। जिस कमरे में चंदन की गंध बिखरी रहती थी, वहाँ कीटनाशक रखा हैं और जहां शाम ढले झाँझ–मजीरा झनकता था, वहाँ तीन–तीन मोबाइलों की रिंगटोन बज रही है।अण्डे तो दे दिए, पर बच्चे कैसे निकलेंगे। वही चिन्ता है। अरे मनुष्य, तेरे विकास में कितना विनाश है। तू क्यों नही चेत रहा?''

गौरैया खिन्न रहती थी। घर की दादी अब भी दाने बिखेरेती। कटोरी में पानी रखती, पर गौरैया को कुछ पसंद नहीं आ रहा था।

अब पुरातन की ओर लौटना संभव नहीं रहा। मनुष्य ने पूर्वजों को पूजने की व्यवस्था की थी। वह अब अवैज्ञानिक हो गया। भोग और गन्ध गायब है। घी बनाने की देशी सुगन्ध नदारद है। अब घर से जंगल बेहतर है।

नई पीढ़ी की आधुनिकता से गौरेया का मन खिन्न है। गौरेया भी विकासवादी है, पर पंख का विकल्प विकास नहीं हो सकता।

जैसे ही खग–शिशुओं के नन्हे–नन्हें पंख फड़फड़ाने लगे। गौरेया लेकर फुर्र हो गई। सच, मानव बस्ती डरावनी हो रही है। गौरेया ने सब जगह बताया, मुझसे भी।

● सतना (म.प्र.)

शब्द क्रीडा

सही उत्तर

कान्हा तेरे कितने नाम?

श्रीकृष्ण, गोपाल, माखनचोर, नन्दलाल, मोहन, यशोदानंदन, देवकीनंदन, मुरलीधर, गिरिधारी, गोपबन्धु, धनश्याम, नाग नथैया, वासुदेव, कंसनिकंदन, रासेश्वर

जानो पहचानो

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

हमारे राज्य पुष्प

राजस्थान का राज्य पुष्पः

रोहिड़ा

डॉ. परशुराम शुक्ल

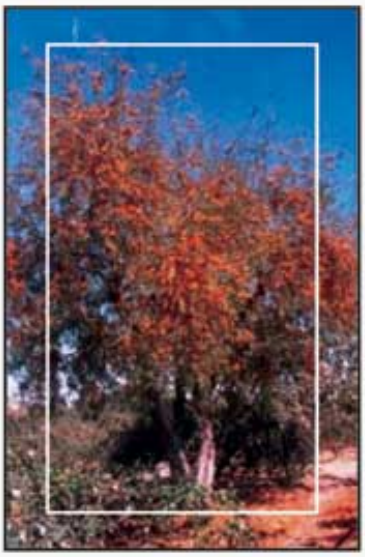

मध्यम काया, रेगिस्तानी,
झुकी डालियों वाला।
छोटी और नुकीली पत्ती,
पौधा बड़ा निराला।
भारत के सूखे भागों में,
कहीं-कहीं मिल जाता।
अरब और अफ्रीकी देशों,
से भी गहरा नाता।
सर्दी गर्मी सब सह लेता,
सूखा भी सह जाता।
लेकिन सूरज की गर्मी बिन
पौधा यह मर जाता।
मौसम आते ही सर्दी का,
अपना रूप सजाता।
लाल और नारंगी पीले,

फूलों से भर जाता।
घंटी जैसे फूल अनोखे,
गुच्छों में छा जाते।
राजकीय होने के कारण,
किस्मत पर इतराते।

• भोपाल (म.प्र.)

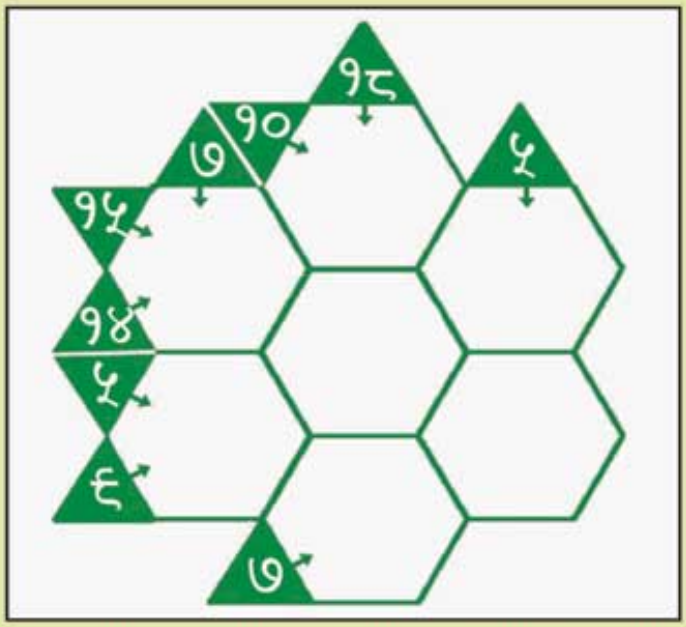

षट्भुजा

देवांशु वत्स

खेलने के नियम

सफेद बक्से में १ से ९ तक के अंकों को इस तहर से लिखें कि तीर की सीध मेंआने वाले बक्सों के अंकों का योग उसी तीर वाले त्रिभुज में लिखे अंक जितना हो।

(उत्तर इसी अंक में)

आलस्य का परिणाम

कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

बिजली चमक रही थी। बादल गरज रहे थे और वर्षा जोरों से हो रही थी। लगातार बारिश की वजह से जंगल में पानी भर गया था। सभी जानवर अपने बच्चों के साथ अपनी–अपनी जगह छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर जा चुके थे।

हवेली के बगीचे में एक तालाब था। तालाब के उस पार एक पहाड़ी थी जिस पर बहुत सी झाड़ियां और जंगली फूलों के पेड़ लगे हुए थे। बगीचे में आम के पेड़ों का एक बहुत बड़ा झुण्ड भी था।

उस झुण्ड के बीचो–बीच चीकू और मीकू नाम के दो खरगोश रहते थे। चीकू बड़ा था और मीकू छोटा।

जब तालाब का पानी उमड़–उमड़ कर सारे बगीचे में फैल गया तो मीकू ने घबराकर अपने भाई चीकू से कहा–''भैया, चलो, अब हम भी सामने वाली पहाड़ी पर

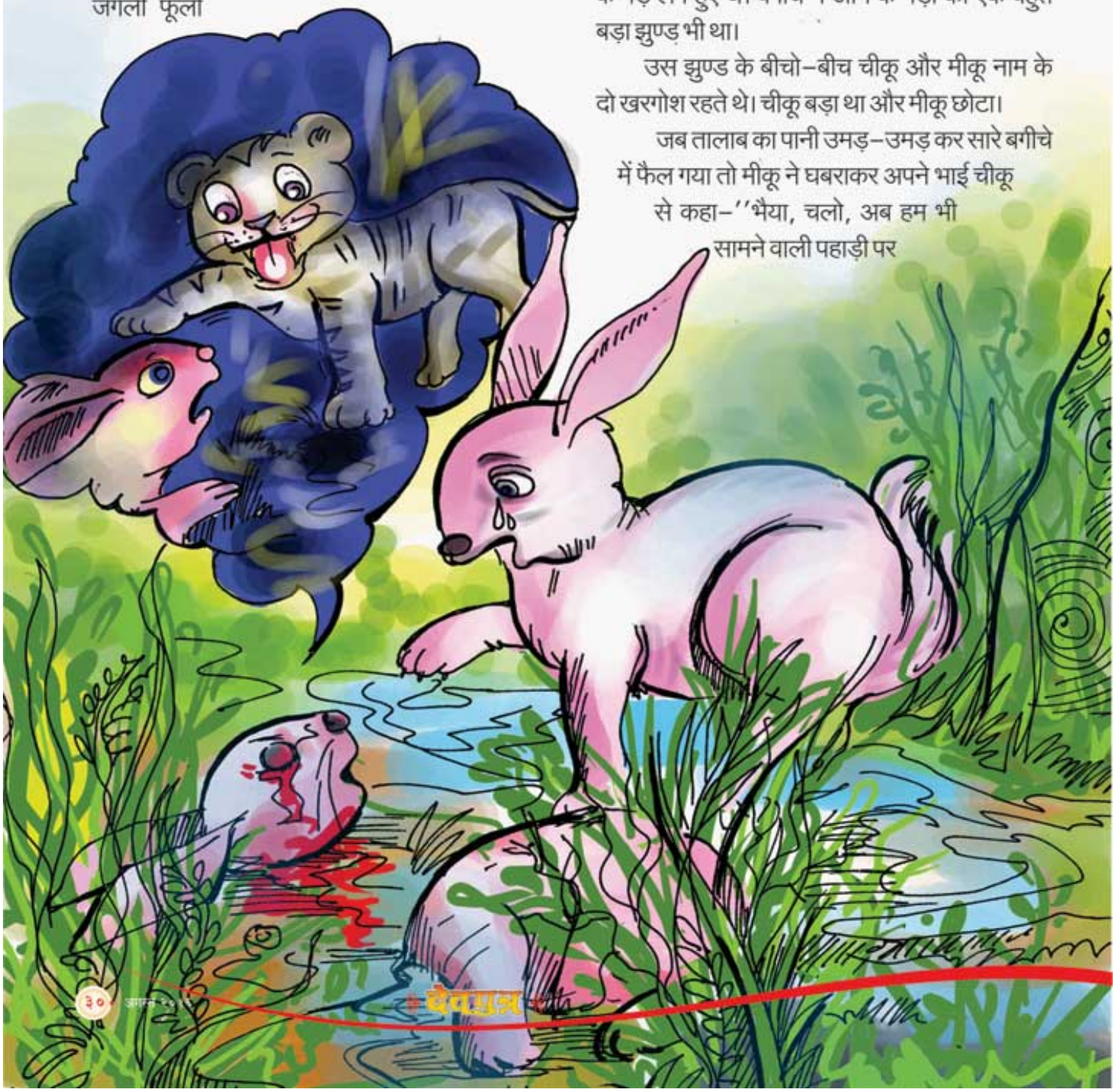

जाकर छिप जाएं।''

''वहाँ क्यों?'' चीकू ने सवाल किया।

''पानी तेजी से बढ़ रहा है, कुछ ही देर में हमारे बिलों में पानी भर जाएगा। हम जब पानी में डूब जाएंगे तब हमें कोई भी जानवर आराम से अपना भोजन बना सकता है'' मीकू बोला।

' ऊँ...हूँ...मैं नहीं जाता। इतनी ऊँची पहाड़ी पर कौन चढ़े? मैं तो थक जाऊंगा।''

''और अगर खतरा सामने आ गया तो?'' मीकू ने पूछा।

''तो क्या हुआ? मैं सामने वाले पेड़ की खोह में नहीं छिप सकता क्या?''

''उस खोह में कोई भी जानवर आसानी से तुम्हें अपनी चपेट में ले सकता है। पर उधर कांटेदार झाड़ी में घुस जाने पर हमें कोई नहीं देख सकेगा। जब पानी उतर जाएगा तब हम लौट आएंगे।'' मीकू ने कहा।

''ना बाबा, मुझे तो नींद आ रही है। मैं तो अब सोने चला।''

''प्रकृति ने हमें इतनी फुर्ती दी है कि अगर हम इसका उपयोग करें तो जरा-सी देर में हम ऊंची पहाड़ी पार कर सकते हैं। इसी मनहूस नींद की वजह से हमारे पूर्वजों ने कछुए जैसे सुस्त जीव से भी मात खाई थी। इसी नींद की वजह से कुत्तों ने भी कितना फायदा उठाया है? इस बेतुकी नींद ने कितना नुकसान पहुंचाया है हमें। क्या इस बात का जरा भी एहसास नहीं है तुम्हे? हमारी पीढ़ी ने आज तक अपनी हालत बदलने की कोशिश ही नहीं की।'' मीकू ने उसे समझाते हुए कहा।

''अब चुप भी रहो मीकू, भाषण मत दो। मैं तुम से बड़ा हूं, तुम से ज्यादा लाभ-हानि की बात सोच सकता हूँ। तुम्हें तो हमेशा वहम घेरे रहता है। तुम एकदम कायर हो। तुम्हें जाना ही है तो चले जाओ। मैं तो यहीं सोऊंगा।''

मीकू ने एक बार ओर चीकू को समझाने की कोशिश की, मगर वह नही माना। आखिर मीकू अकेले ही पहाड़ी पर चढ़कर झाड़ियों में छिप गया।

बारिश कुछ और तेज हो गई थी। मीकू अपने भाई चीकू के लिए परेशान था। उसका मन कर रहा था कि एक बार फिर चीकू को समझा कर उसे अपने साथ ले आए। लेकिन बारिश ने सारे रास्ते बंद कर दिए थे।

चीकू आराम से अपने बिल में सोया हुआ था। वह अपने भाई के मुकाबले बहुत सुस्त था। मीकू ही उसके लिए घास तोड़कर लाता था। वह खाता और सोया रहता। उनके माता-पिता को कोई शिकारी पकड़कर ले गया था। इसलिए वे दोनों अकेले रहते थे।

आधी रात बीती होगी तभी चीकू को लगा कि उसका बदन भीग रहा है। जब उसकी आँखें खुली तो उसने स्वयं को गले तक पानी में डूबा पाया। पूरे बिल में पानी भर चुका था। बाहर जाने के सारे रास्ते बंद हो चुके थे। बड़ी मुश्किल से गिरता पड़ता वह बिल से बाहर निकला । वह सर्दी से कांप रहा था। उसमें हिलने-डुलने की ताकत भी नहीं रह गई थी।

कुछ ही देर में उसे लगा कि खोह में कोई और भी है। सांसों की आवाज वह साफ सुन रहा था। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। पलट कर देखने पर मालूम हुआ कि दो जलती हुई आंखें उसे घूर रही हैं। वह न आगे बढ़ सकता था, न पीछे हट सकता था। पीछे मूसलाधार बारिश थी, तो आगे घूरती हुई आँखें।

इधर सारी रात मीकू बैचेन रहा। बार-बार उसका मन कर रहा था कि वह चीकू के पास जाए और किसी न किसी तरह उसे मना कर साथ ले आए। बिल में पानी भर चुका होगा। रास्ते में इतना पानी था कि खरगोश तो क्या बकरी भी डूब जाती।

''चीकू अगर उससे छोटा होता तो वह अपने दांतों से उसके कान पकड़ कर खींच लाता।'' अफसोस कि मीकू छोटा था और चीकू उस पर बड़प्पन का रौब जमाए रहता था। काश, उसने मेरी बात मान ली होती तो मुसीबत में क्यों पड़ता।'' वह सोचता रहा।

भोर का उजाला फैलने लगा था। जैसे ही बूंदें हल्की हुई, मीकू टीले से कूद पड़ा और गिरता-पड़ता अपने

बिल की तरफ दौड़ा बिल में पानी ही पानी था। चीकू का कहीं पता नहीं था। वह दौड़-दौड़ कर उसे ढूंढने लगा। जहां कहीं सफेदी झलकती, वह दौड़कर वहीं पहुंच जाता कि शायद वहां चीकू हो।

आखिर चीकू उसे दिखाई दे ही गया। लेकिन इस हाल में कि उसकी गर्दन टूटी हुई है, शरीर नुचा हुआ है और आंखें बाहर हैं।

''भैया!'' चीकू की इस हालत पर मीकू चीख उठा। परन्तु अब क्या हो सकता था। आखिर चीकू को उसकी सुस्ती का परिणाम भुगतना पड़ा था। अवसर पाकर बिल्ली ने उसे धर दबोचा था।

● आकोला (राज.)

ढूंढो तो जानें

● राजेश गुजर

बच्चो, नीचे बनी ज्यामितीय आकृति वृत्त, वर्ग, त्रिभुज और चतुर्भुज के अंदर बने टुकड़ों को सामने वाले बने चित्र में ४ कौन-कौन से टुकड़े हैं, वैसे ही टुकड़ों को ढूंढो।

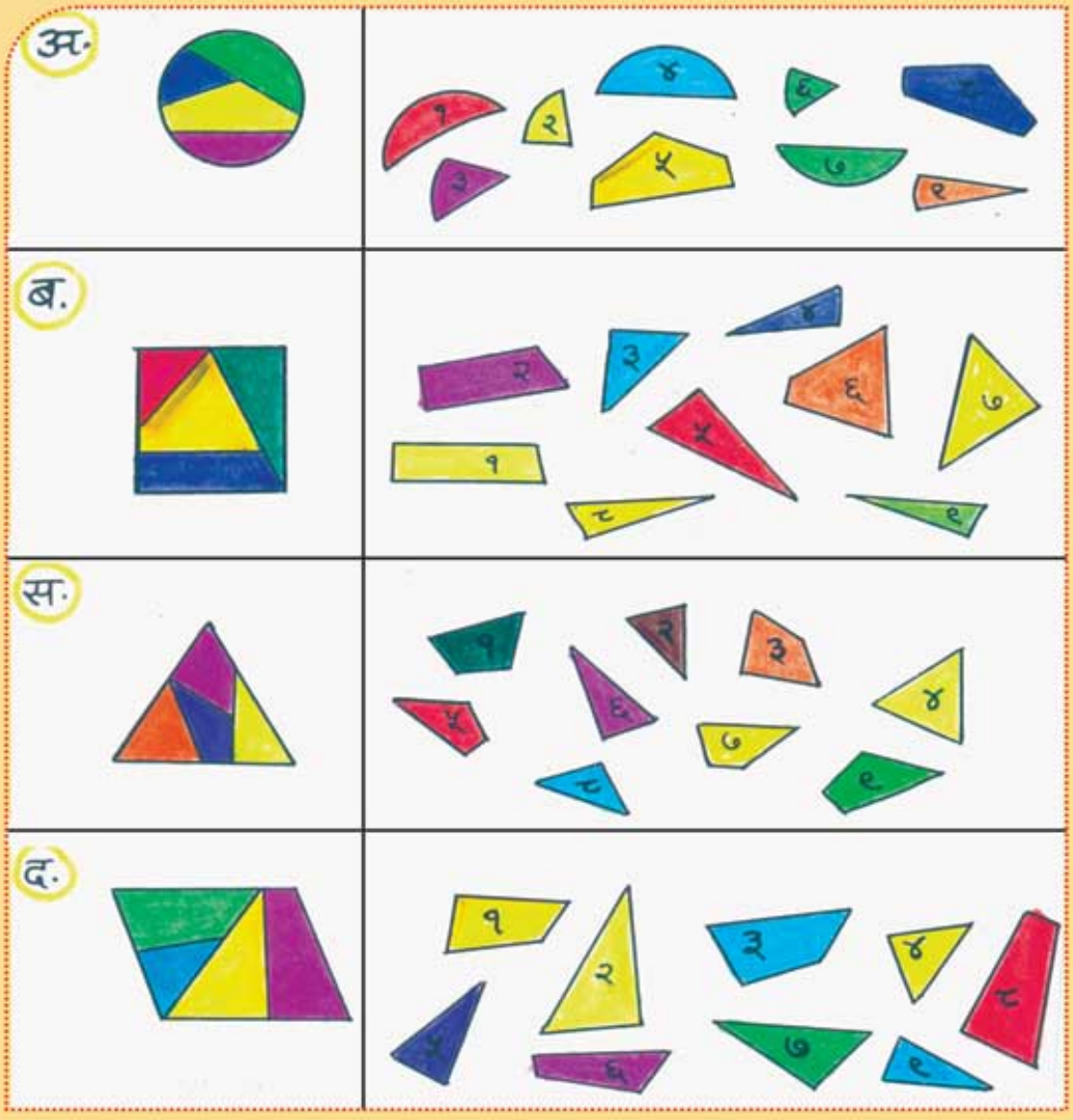

(उत्तर इसी अंक में)

दो हाथ

कविता : पद्मा चौगांवकर

अपने ये
दो हाथ-
दुआ के लिए
उठे,

नमन को
झुके,
मदद को
बढे,
दोस्ती में
मिले,
कर्म को
चले
हर कभी,
हर कहीं,
अनथके
बिन रुके
करते हैं-
करामात!

बहुत बड़ी,
इतनी सी बात,
मैले न
रहे
हाथ रखो
साफ!
भाग्य की
रेखाएं
हथेली पर
होती हैं।
हाथ हों
मैले तो
किस्मत
सोती है!

● गंजबासौदा (म.प्र.)

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार की स्थापना की गई है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष देवपुत्र द्वारा निर्धारित विषय पर, निर्धारित विधा में रचित सर्वश्रेष्ठ, मौलिक, अप्रकाशित स्वरचित रचनाओं पर प्रदान किए जाएंगे। वर्ष २०१६ के लिए यह पुरस्कार ऋतुवर्णन विषय पर रचित श्रेष्ठ काव्य रचनाओं पर प्रदान किए जाएंगे।

अपना देश छः ऋतुओं वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म से सम्पन्न देश है बाल साहित्य में प्रायः वर्षा, ग्रीष्म, बसन्त पर रचनाएं मिलती हैं शरद, शिशिर, हेमन्त को शीत वर्णन में ही समाहित माना जाता है। इन छहों ऋतुओं पर भी पृथक-पृथक रचनाएं हो सकती हैं। प्रविष्टियां सादर आमंत्रित हैं। इच्छुक रचनाकार अपनी प्रविष्टि ३० जनवरी २०१७ तक अवश्य भेज दें। प्रत्येक प्रविष्टि के साथ रचना के मौलिक अप्रकाशित एवं स्वरचित होने का पत्र स्वयं सत्यापित प्रमाण पत्र के रूप में साथ भेजना अनिवार्य है-इस प्रमाण पत्र की सत्यता का पूरा उत्तरदायित्व रचनाकार का रहेगा। रचनाएं हिन्दी भाषा में रचित हो। अनूदित रचनाएं स्वीकार्य नहीं है।

रचनाकार के लिए कोई आयु बंधन नहीं है। श्रेष्ठतम पांच रचनाओं का चयन देवपुत्र द्वारा मनोनीत विधा एवं विषय के मर्मज्ञ निर्णायकों द्वारा किया जाएगा। जिनका निर्णय सर्वमान्य होगा।

पुरस्कृत रचनाओं को क्रमशः १५००/- १२००/- ११००/- एवं ५००-५०० रु. के दो प्रोत्साहन पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा।

विशेष - पुरस्कृत एवं अन्य प्रविष्टियाँ में से चयनित रचनाओं का संपादित स्वतंत्र संकलन या देवपुत्र में प्रकाशन की भी योजना है। अतः प्राप्त रचनाओं के प्रकाशनार्थ उपयोग का अधिकार देवपुत्र के पास सुरक्षित रहेगा। प्रकाशित संकलन/अंक की एक प्रति सम्मिलित रचनाकारों को सादर प्रेषित की जाएगी।

● गंजबासोदा (म.प्र.)

वर्षा आई

कविता : डॉ. दादूराम शर्मा

वर्षा आई, वर्षा आई। उमड़-घुमड़ कर बदली छाई।।
सूरज ने था खूब सताया। सबका अंग-अंग झुलसाया।।
अपराधी-सा अब घबराया। डरकर खुद को कहीं छिपाया।।
सबने मुक्ति उमस से पाई। वर्षा आई, वर्षा आई।।
गरज रहे बादल घनघोर। फैला पंख नाचते मोर।।
पानी बरसे पवन झकोर। शांत हुआ गर्मी का जोर।।
चुनरी हरी, धरा ने पाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
चल-चल कर जब घन थक जाते। पर्वत शिखरों पर सुस्ताते।।
फिर बढ़कर सबको नहलाते। तृषित धरा की प्यास बुझाते।।
नवजीवन गगरी भर लाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
भरे ताल उमड़े नद-नाले। कृषक बीज खेतों में डाले।।
टर्राते मेंढक मतवाले। अगणित जुगनू दीपक बाले[1] ।।
रात खोजने किसको आई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
पादप ने नवजीवन पाया। भू का अंग-अंग हुलसाया।।
'पीउ-पीउ' चातक ने गाया। आल्हा गान गाँव मन भाया।।
प्यारी बहना राखी लाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
फसलों से धरती हर्षाती। तरुणी नदी चले इठलाती।।
रंग-बिरंगे फूल खिलाती। झरनों का संगीत सुनाती।।
इंद्रधनुष की छबि मन भाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
हल छठ, जन्म-अष्टमी आती। असुर नाश की याद दिलाती।।
पंद्रह अगस्त सर्व प्रिय आता। गगन तिरंगा ध्वज फहराता।।
धूम गणेशोत्सव की लाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
जुड़ें ग्रामजन सैला नाचें। घर-घर मिलकर मानस बाँचे।।
डंड पेल बल अर्जित करते। तरुण अखाड़ों में फिर लड़ते।।
नागपंचमी पोला लाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
अति वर्षा घर जीर्ण ढहाती। आती बाढ तबाही लाती।।
फसलों को चौपट कर जाती। जन-धन को हानि पहुँचाती।।
सृजन संग, ध्वंस भी लाई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।
वर्षा हुई मूसलाधार । हुआ अदृश्य सहसा[2] संसार।।
थमा सभी का सुख-संचार। उड़े न पक्षी पंख पसार।।
गति अवरोधक बनकर आई। वर्षा आई, वर्षा आई ।।

१. बाले=जलाएं २. सहसा=अचानक

बच्चो! कविता में वर्षा ऋतु में आने वाले कई भारतीय त्योहारों के नाम आए है क्या पता लगाओगे, ये इस वर्ष कब-कब आएंगे।

● सिवनी (म.प्र.)

पेड़ चढ़े पहाड़

कविता : संतोष परिहार

घना वन,
शेर की दहाड़
ऊँचे-ऊँचे पेड़,
कैसे चढ़े पहाड़?
सब समझते,
शेर की दहाड़।
मैं बताऊँ पेड़,
कैसे चढ़े पहाड़?
इतना कठिन नहीं,
था यह काज।
बच्चो जानो,
इसका राज ।।
कंकर पत्थर,
कण-कण माटी
बनते टीले,
मनोरम घाटी।।
हवा आंधी ने,
लाकर डाले बीज।
वर्षा के बाद,
मनी हरियाली तीज।।
अंकुरित हुए बीज,
छाई खुशहाली।
पनप उठे पौधे,
फैली हरियाली।।
जलवायु मिट्टी,
बन गई आधार।
मौसम ने किया,
उनका विस्तार।।
पौधे बने पेड़,
ऐसे चढ़े पहाड़।
डरे नहीं सुन
शेर की दहाड़।।

बुरहानपुर (म.प्र.)

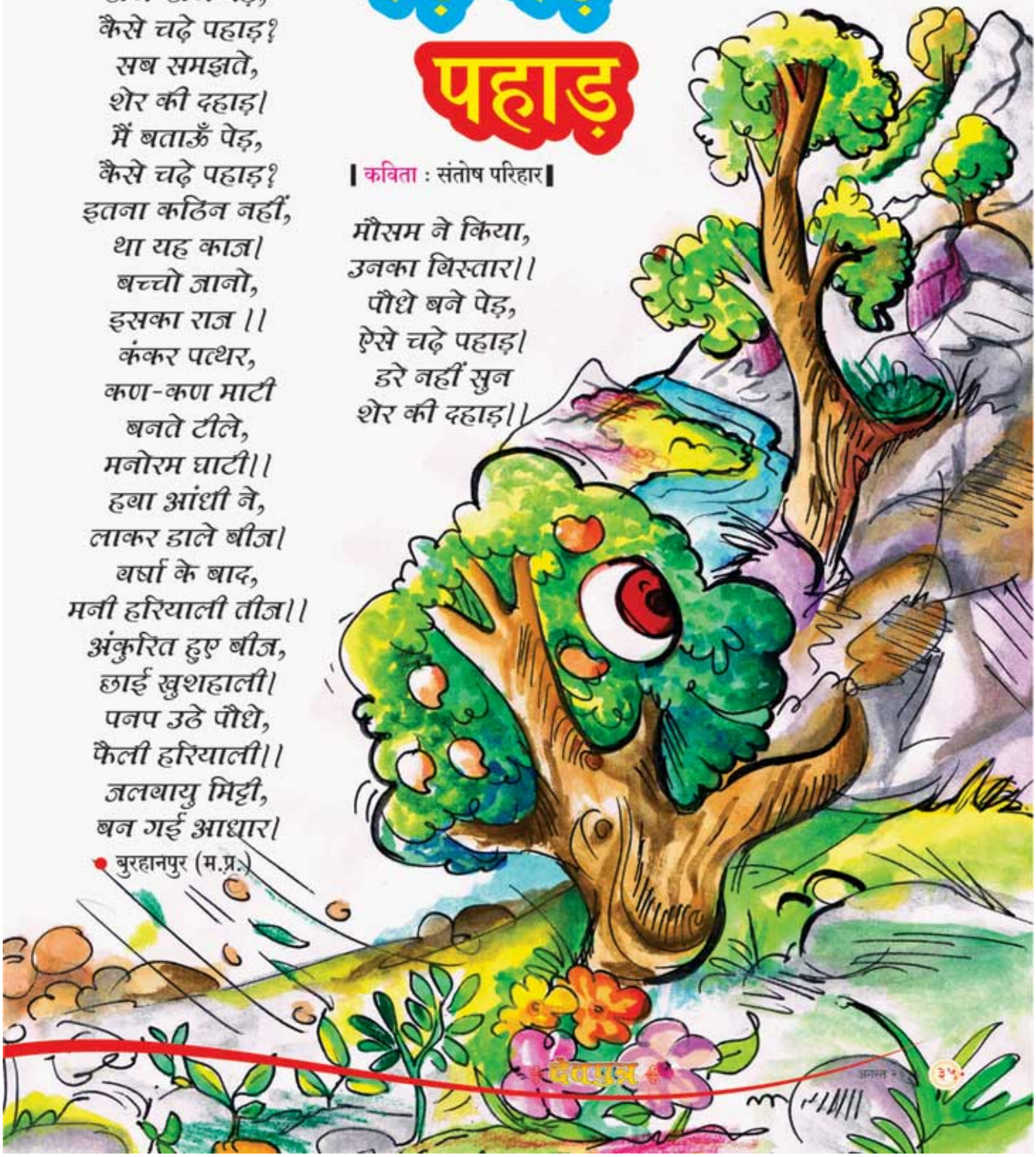

चुटकुले

माँ - चेतन बेटा! तुम सबेरे सबेरे बिना कुछ खाऐ कहां जा रहे हो?

चेतन - माँ! अभी अभी बड़े भैया के हाथ में दो चांटे खा चुका हूँ।

****

भिखारी - बाबूजी, चाय के लिए दस रुपए दे दीजिए।

बाबूजी - लेकिन चाय तो पांच रुपए की आती है।

भिखारी - बाबूजी ! क्या आप नहीं पिएंगे?

****

अध्यापक (छात्र से) - चांद और धरती में क्या संबंध है।

छात्र- श्रीमान्!, भाई बहन का।

अध्यापक- कैसे?

छात्र- क्योंकि धरती को हम मां कहते है और चंदा को मामा।

****

अध्यापक (छात्र से) - शाला का क्या अर्थ है?

छात्र - श्रीमान्! शाला वह कैद है जहां से रोज छूटकर अगले दिन फिर जाकर उपस्थिति लगवानी पड़ती है।

◂ सुनील कुमार माथुर, मेड़तासिटी (राज.)

****

एक ग्राहक (दुकानदार से) आपकी दुकान की कोल्ड्रिंक में तो कॉकरोच तैर रहा है।

दुकानदार (सहजता से)- अब तो आप समझ गए होंगे। इस कोल्ड्रिंक को केवल इंसान ही पसंद नहीं करते।

****

एक मित्र (दूसरे मित्र से) शादी के समय दुल्हे को घोड़े पर अकेले क्यों बिठाया जाता है?

दूसरा मित्र - उसे मौका दिया जाता है। बेटा, अभी भी समय है भाग जा।

****

रवि- पिताजी कल मैं रात के बारह बजे तक पढ़ता रहा।

पिताजी- तुम पढ़ने कब बैठे?

रवि- ११ बजकर ५० मिनट पर।

****

टीचर - विनोद तुम इतना बड़ा-बड़ा क्यों लिखते हो?

विनोद- इसलिए कि आप घर से चश्मा लेने न भेजे।

****

अध्यापक - क्यों सोनू, तुम आज फिर देर से शाला आए हो? अब कौन सा बहाना बनाओगे।

सोनू - श्रीमान्! मैं आज बहुत तेज दौड़कर आया हूं कि बहाना बनाना ही भूल गया।

◂ ऋषिमोहन श्रीवास्तव, ग्वालियर (म.प्र.)

गुस्सा बादल का

कविता : हरप्रसाद रोशन

अम्मा गुस्सा बादल का,
हमें न बिलकुल भाता है।
गरज-गरज कर देखो वह,
हमको खूब डराता है।
कैसे बाहर खेलें हम,
झट पानी बरसाता है।
थर-थर करके कांपे मन,
जब बिजली चमकाता है।

अम्मा बोली बादल को,
कभी न गुस्सा आता है।
धरती पर जल बरसा कर,
वह हरियाली लाता है।
बादल तो है बच्चे-सा,
खिल-खिल कर मुस्काता है।
खुश होकर आसमान पर,
इन्द्रधनुष दिखलाता है।

● हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

आपकी पाती

देवपुत्र का अप्रैल २०१६ का अंक धरोहर पढ़ने को मिला। वरिष्ठ साहित्यकारों की विशिष्ट बाल रचनाएँ जो इस धरोहर विशेषांक में संकलित की गई हैं बहुत रोचक हैं। यह अंक सभी के लिए संग्रहणीय एवं पठनीय है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से भी उपयोगी है।

सम्पादकीय में इस अंक को उस चुनौती के उत्तर के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सोचते है हिन्दी में बाल साहित्य युग तो अब प्रारंभ हो रहा है। निश्चित ही इसकी विषय वस्तु को पढ़कर लगता है कि ये शाश्वत एवं कालातीत रचनाएं है। इस अंक को प्रकाशित कर आपने बाल साहित्य के रचनाकारों की अनेक भ्रांतियों को तोड़ा है। यह अंक बाल साहित्य के इतिहास की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगा।

फास्ट फूड की तरह आज जिस प्रकार का बाल साहित्य सामग्री को परोसा जा रहा है। इससे छात्रों की बुद्धि मोटी होती जा रही है। इस अंक ने इस जड़ता को तोड़ा है। रचनाकारों को इससे एक नई दिशा मिलेगी। इस विश्वास के साथ

डॉ. प्रेम भारती, भोपाल (म.प्र.)

****

देवपुत्र का अंक कम्प्यूटर के कमाल से साज-सज्जा के साथ नए रंग रूप में पढने को मिला। बहुत ही सुन्दर, आकर्षक संग्रहणीयता के साथ हृदय के छू गया। अब देवपुत्र उच्च कोटि की पत्रिका बन गई है जिसे बच्चे तो क्या पूरा परिवार पसंद करता है। सारी रचनाएं शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक, रोचक व सराहनीय है। यह सब आपकी मेहनत का फल है। आप और सारे रचनाकार लेखकों को मेरा साधुवाद।

देवपुत्र इसी प्रकार दिन दुनी रात चौगुनी प्रगति करता हुआ। विश्व में कीर्तिमान की पताका फहराता रहे।

चांद मोहम्मद घोसी, मेड़तासिटी (राज.)

****

देवपुत्र अपने आप में ज्ञानवर्धक रोचक सामग्री से परिपूर्ण होता है। आप जब इतनी मेहनत से संपादन करते हैं तो प्रत्येक अंक संग्रहणीय और पठनीय बन जाता है। पृष्ठों की संख्या बढ जाए तो बच्चों को और ज्यादा सामग्री पढने को मिल सकेगी। लेखक का मोबाईल नं. भी देने लगें तो सम्पर्क करने में सुगमता हो सकेगी।

ऋषिमोहन श्रीवास्तव, ग्वालियर (म.प्र.)

****

मैं लगभग ८ वर्षों से देवपुत्र का नियमित पाठक हूँ। आज के बदलते परिवेश में भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं पोषक देवपुत्र गागर में सागर है। नन्हें मुन्ने बाल गोपालों में सृजनशीलता एवं रचनाधर्मिता के गुणों को विकसित करता एक ज्ञानपुंज है। मेरे परिवार का एक अभिन्न लाड़ला सदस्य जिसे शेष परिवार के सदस्य से बेहद प्यार करते है। देवपुत्र में प्रकाशित कहानियों को पढ़ना बिलकुल ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे मां की गोद में बैठकर लोरी सुनना। भारत की सत्यम-शिवम्-सुन्दरम् की संस्कृति की मूल आस्था को बलवान करती बाल पत्रिका देवपुत्र हमारी अमूल्य धरोहर है। एक ऐसा दिवाकर जिसकी ओजस्वी किरणों से समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष का कोना-कोना प्रकाशमान हो रहा है। माँ वीणा प्राणी से विनती करता हूँ कि देवपुत्र की इस अविरल यात्रा को गति प्रदत्त करती रही ताकि उच्च कोटि को ज्ञान से चिर-परिचित होना का सुअवसर मिलता रहे।

देवेन्द्र सुथार, बागरा (राज.)

****

ताकतवर कौन?

कहानी : मीना

बहुत पहले कश्मीर घाटी में एक भेड़ रहती थी। रंग उसक दूध सा सफेद था। जहाँ भी जाती, वह उछलती कूदती रहती। एक दिन वह उछलते–कूदते बर्फ पर फिसलकर गिर पड़ी और रोने लगी। उसे बहुत दुःख हुआ था। रोते–रोते उसने बर्फ से पूछा–''बर्फ! तुमने मुझे गिरा दिया। क्या तुम ही दुनिया में सबसे ज्यादा ताकतवर हो?''

बर्फ ने बताया– ''नहीं सूरज मुझसे ज्यादा ताकतवर है। मैं धूप की गर्मी से पिघल जाती हूं और धूप सूरज से ही तो आती है।''

भेड़ ने सूरज से पूछा–''सूरज–सूरज! क्या तुम सबसे ज्यादा ताकतवर हो?''

'नहीं'! सूरज बोला– ''मुझसे ज्यादा ताकतवर तो बादल है जो मुझे ढक लेता है और मेरे प्रकाश व गर्मी को कम कर देता है। इसलिए निश्चय ही वह मुझसे ज्यादा ताकतवर है।''

भेड़ ने बादल से पूछा– ''बादल! बादल! क्या तुम ही सबसे ज्यादा ताकतवर हो?''

'नहीं, मुझे भी बारिश बन कर बरस जाना होता है, इसलिए बारिश मुझसे ज्यादा ताकतवर है।'' बादल ने बताया।

तब भेड़ ने बारिश से पूछा– ''बारिश! बारिश! क्या तुम ही सबसे ज्यादा ताकतवर हो?''

बारिश का जवाब था– ''चूंकि मिट्टी मुझे सोख लेती है। मिट्टी में गिरकर मेरा कुछ भी नहीं बचता, इसलिए मिट्टी ज्यादा ताकतवर है।''

भेड़ ने मिट्टी से पूछा–''मिट्टी! मिट्टी! क्या तुम सबसे ज्यादा ताकतवर हो?''

मिट्टी ने उत्तर दिया–''घास मुझमें अपनी जड़ें जमा लेती है, अतः घास मुझसे ज्यादा ताकतवर है। मैं यदि घास से ज्यादा ताकतवर होती तो घास की क्या हिम्मत कि वह मुझमें अपनी जड़ें जमा लेती।''

भेड़ ने घास से पूछा– ''क्या सचमुच तुम ही सबसे ज्यादा ताकतवर हो?''

घास ने बताया– ''यदि मैं सबसे ज्यादा ताकतवर होती तो क्या तुम मुझे चर सकती थीं?''

अब भेड़ को भरोसा हो गया कि सबसे ज्यादा ताकतवर तो वह खुद ही है। वह पहले सी उछलने कूदने लगी।

● भवानी मंडी (राज.)

इन्द्रधनुष जी

कविता : राजनारायण चौधरी

इन्द्रधनुष जी कभी हमारे पास आइए।
बैठ साथ में हलवा, पूरी खीर खाइए ।।
अपने जैसा सूट रंगीला साथ लाइए।
लाकर अपने हाथों हमको पहनाइए।।
रंगों की खेती होती है क्या अंबर में?
फसल रंग की धरती पर भी तो उगाइए
वर्षा में ही आप सदा निकला करते हैं
छिप जाते फिर कहाँ ? जरा हमको बताइए
अब जब आना हो आ कुछ दिन हम संग रुकिए
रुककर किस्से अंबर के हमको सुनाइए
दादाजी की बगिया में चलकर घूमेंगे
संभव हो तो चंदा तारों को भी लाइए।

● हाजीपुर (बिहार)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७** वर्ष २०१६ में प्रकाशित **बाल कहानी की पुस्तक** हेतु प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार के नाम से **४०,संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)** पर **३०, जनवरी २०१७** तक प्राप्त होना चाहिए। **पुरस्कार स्वरूप ५०००/- की राशि** प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित है।

– संपादक

वीरान जंगल

कहानी : हरीराम कहार

बात पुरानी नहीं है, जामनगर गांव में एक लकड़हारा रहा करता था। उसका नाम सुरेश था। वह घने जंगल से सूखी लकड़ियां चुन–चुन कर लाता और शहर में बेचकर अपने परिवार का गुजारा किया करता था।

एक गट्ठा लकड़ी इकठ्ठी करने में उसे दिनभर जंगल–जंगल की खाक छानना पड़ती थी। तब जाकर शाम तक किसी तरह एक गड्ढा तैयार करता। फिर रात भर चलता और गांव में अपने घर आता फिर दूसरे दिन भोर होते ही कलेवा लेकर शहर में लकड़ी बेचने चल देता। अथक परिश्रम के बाद उसे चंद रुपए मिलते पर उसे अपनी मेहनत पर संतोष था।

समय गुजरता गया, उसके बच्चे बड़े होने लगे। खर्च बढ़ने लगा। वह परेशान रहने लगा। तभी शहर के एक ठेकेदार से उसकी मुलाकात हुई। उसने बातों–बातों में कहा– ''सुरेश! क्या तुम भी ओस चाटते रहते हो? अरे तेरे गांव के पास तो सागौन का घना जंगल है। सोना ही सोना खड़ा है। आजकल जानता है, इमारती लकड़ी की मांग बहुत है। दो चार चरपटे पटिया ला दिया कर बस तेरे पास पैसे ही पैसे होंगे।''

''लेकिन सागौन तो सरकारी संपत्ति है। नहीं, अपने काम में बेईमानी नहीं करूंगा।''

''अरे, दुनियां कहाँ की कहाँ पहुंच रही है, सत्यवादी हरिश्चन्द्र की संतान..... अभी समय है कमा ले.....ले ये १०० रुपए।'' लालच देते हुए उसने एक सौ का पत्ता उसके हाथ पर रख दिया।

सुरेश ने इतने सारे रुपए नहीं कमाए थे। उसके मन का लालच जाग उठा। वह खुशी–खुशी घर की ओर चल पड़ा।

आंधी रात को उसने ठेकेदार का दरवाजा धीरे से खटखटाया–''भाईजी ...मैं आ गया'' उनींदा सा वह उठा। ''अरे किसी ने देखा तो नहीं? चल पिछवाड़े डाल दे ये लट्ठे। उसने दो लकड़ी के चरपटे धम्म से पटक दिए और अंधेरे में गायब हो गया।

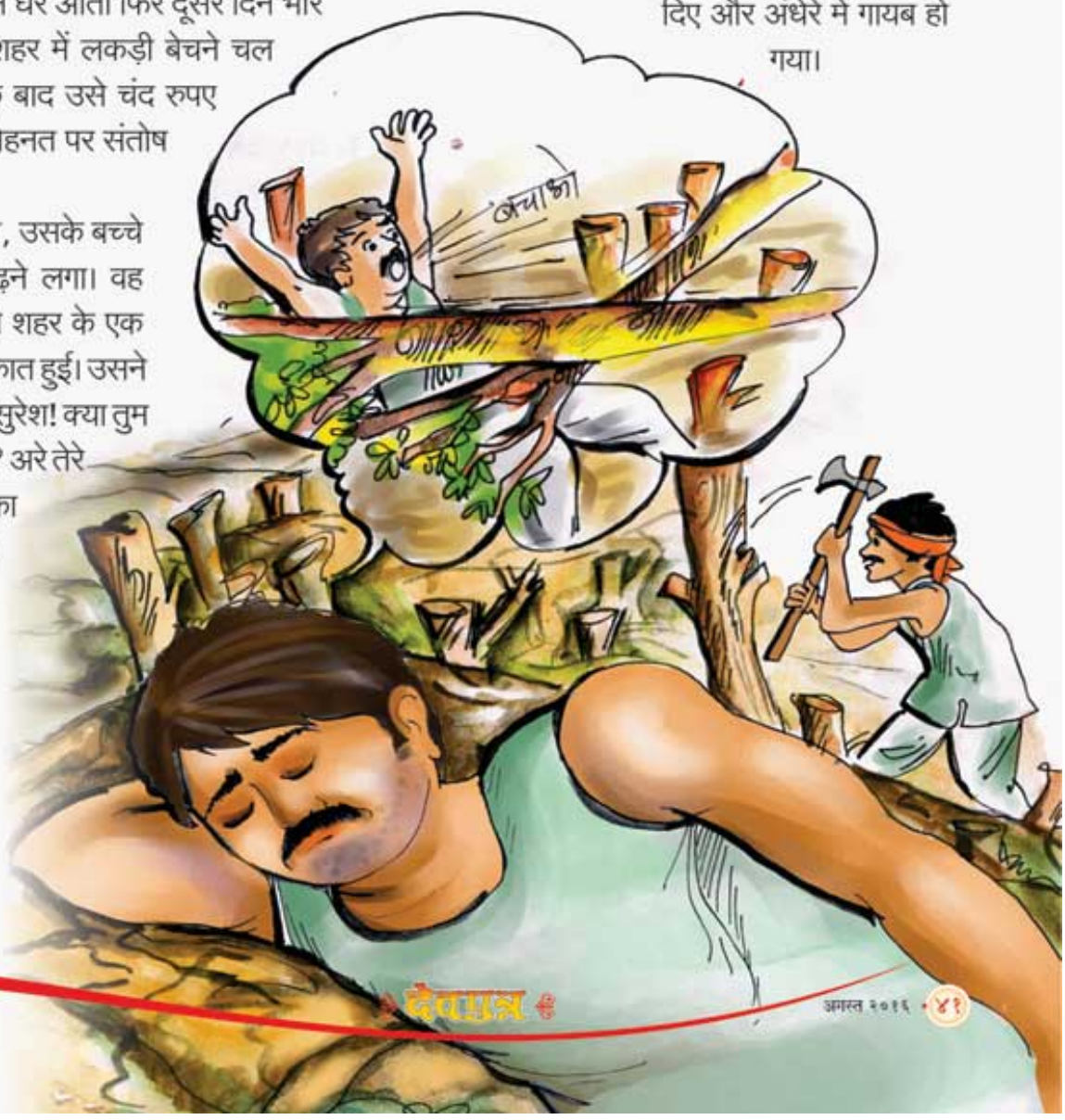

पहली बार सुरेश ने आसमान को छूते गीले हरे सागौन को काटना शुरू किया उसे बड़ी पीड़ा अनुभव हुई।

फिर उसकी बेइमानी बढ़ती गई। अब तो उसने दो मजदूर और साथ में शामिल कर लिए।

सुरेश के पेड़–पौधे सूखने गिरने लगे और सुरेश का घर हरा भरा हो गया अब उसके पास पैसे ही पैसे थे। गरीबी के दिन दूर होने लगे।

आज रात उसने १५० वर्ष पुराने पांच झाड़ को काटने का मन बना लिया। दाम ऊंचे मिलने वाले थे। वैसे भी जंगल आधे–आधे सूने हो चले थे। आराम करते समय वह रात गहरी हो जाने पर वह जंगल जाता इसलिए एक सूने टीले पर आराम करने लगा। थकान भी हो रही। तभी उसने देखा एक वृक्ष उसने सीने पर गिर पड़ा वह छटपटाने लगा। आसपास एक भी वृक्ष नहीं था। वीरान जंगल...सांस लेने में भी उसे दिक्कत हो रही थी। वह बदहवास चिल्लाया। ''कोई मुझे बचाओ।'' आसपास उसके साथियों ने उसे झकझोरा ''अरे! सुरेश! कोई सपना देख रहा था।''

''हाँ, मैं एक वीरान जंगल में भटक रहा था। जहाँ न हवा थी, न पानी तब उसे एहसास हुआ अब मैं जंगल से लकड़ी नहीं काटूंगा। उसने साथियों को समझाया। ''भाईयों आज से कोई लकड़ी नहीं काटेगा। जो काटेगा पहले मेरे साथ मुकाबला करेगा।''

उसके इस बदलाव से सभी भौंचक्के रह गए। लेकिन सुरेश की भुजाएं देखकर वह उसका विरोध नहीं कर पाए और घर की ओर चल पड़े।

● पिपरिया (म.प्र.)

सही उत्तर

षट्भुजा

सही उत्तर

देवपुत्र प्रश्नमंच

(१) अ (२) आ (३) इ (४) आ (५) अ (६) इ (७) आ (८) इ (९) अ (१०) आ

ढूंढो तो जानें

(अ) ३,४,७,८ (ब) २,३,५,६ (स) ३,४,५,६ (द) २,३,४,८

पहेलियाँ

(१) छाता (२) इन्द्रधनुष (३) तिरंगा (४) बादल (५) बिजली (६) पानी

छोटा बड़ा

१०, ६, ५, ३, ९, १, २, ४, ७, ८

बाल प्रस्तुति

उठ बैठ खड़े हो जाओ

कविता : मनीष धाकड़

उठ बैठ खड़े हो जाओ साथियो!
समय नहीं है सोने का।
शत्रु बड़ा आया सीमा पर
समय नहीं है रोने का।।
दुश्मन हमें ललकार रहा है
माँ पर करता वार रहा है
घायल गंभीर हुई है माता
दर्द अब और सहा नहीं जाता
शुभ घड़ी है, अशुभ नहीं होने का।
उठ बैठ खड़े हो जाओ साथियो
समय नहीं है सोने का।।
कई बार युद्ध में हारा है
कहता कश्मीर हमारा है
शत्रु जो दिखता सरहद पर
उसको तुम ललकार दो
एक कदम आगे आए तो
उसको बढ़ कर मार दो
बहुत कर लिया बर्दाश्त दोस्तो!
अब कुछ भी नहीं सहने का।
उठ बैठ खड़े हो जाओ साथियों!
समय नहीं है सोने का।

• पीपलरावाँ (म.प्र.)

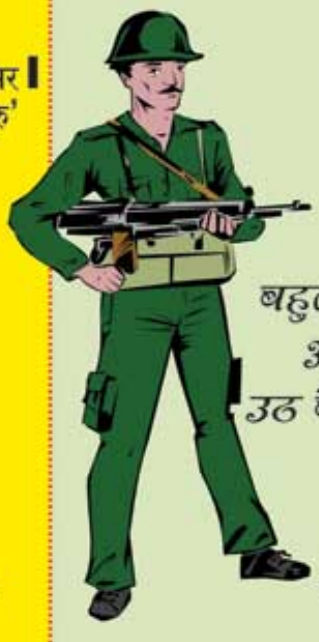

लप्पू सेठ

कविता : आचार्य शिवप्रसाद सिंह राजभर 'राजगुरु'

इतने मोटे लप्पू सेठ
हाथी जैसा उनका पेट
उठने में होती अलसेट
नहीं ढंग से सकते लेट
हाथी जैसी मोटी टाँग
दस मीटर न सकते भाग
पेट बना लिया गोदाम
बड़े चटोरे, भोजन काम
खानपान पर दिया न ध्यान
लगते सूमो पहलवान
नियमित किया न करते कसरत
मन ही रखी दौड़ की हसरत
आप स्वास्थ्य पर देना ध्यान
मत बनना लप्पू सेठ समान

• सिहोरा (म.प्र.)

आजादी
कथा - चंदा सिंह
चित्रकथा - देवांशु वत्स
१५ अगस्त के दिन राम...
अरे राजू, इस दुकान में तुम बर्तन क्यों साफ कर रहे हो?
चाय की दुकान
हाय!
राम, आज मैं जल्दीबाजी में इधर से गुजर रहा था तो गलती से इस दुकान के कुछ ग्लास टूट गए...
उसकी भरपाई के लिए दुकान के मालिक ने दोपहर तक काम करने को कहा है!
ए लड़के, तुम भी साथ में प्लेटें धोओ!
काकाजी अगर मैं टूटे ग्लास की भरपाई कर दूं तो?
ठीक है लाओ!
अभी लेकर आता हूं!
पैसे भी ले लूंगा और काम भी करा लूंगा!
लेकिन यह क्या!
बाल मजदूरी कराता है चल थाने
ओ जी मै तो...
फिर...
धन्यवाद मित्र!
चलो, अब ध्वजारोहण समारोह में चलते हैं!

कविता बनाइए २०

बच्चो ! बरसात के धीरे से विदा होते होते त्यौहारों की महारानी दीपावली आने की तैयारियां शुरु हो जाएंगी। लेकिन उसके पूर्व आ जाएगा दशहरा। दीपावली महारानी है तो दशहरा उसका सेनापति।

इस कल्पना को लेकर लिख भेजिए चार पंक्तियों सुन्दर सी कविता।

चयनित कविता का प्रकाशन होगा अक्टोबर अंक में।

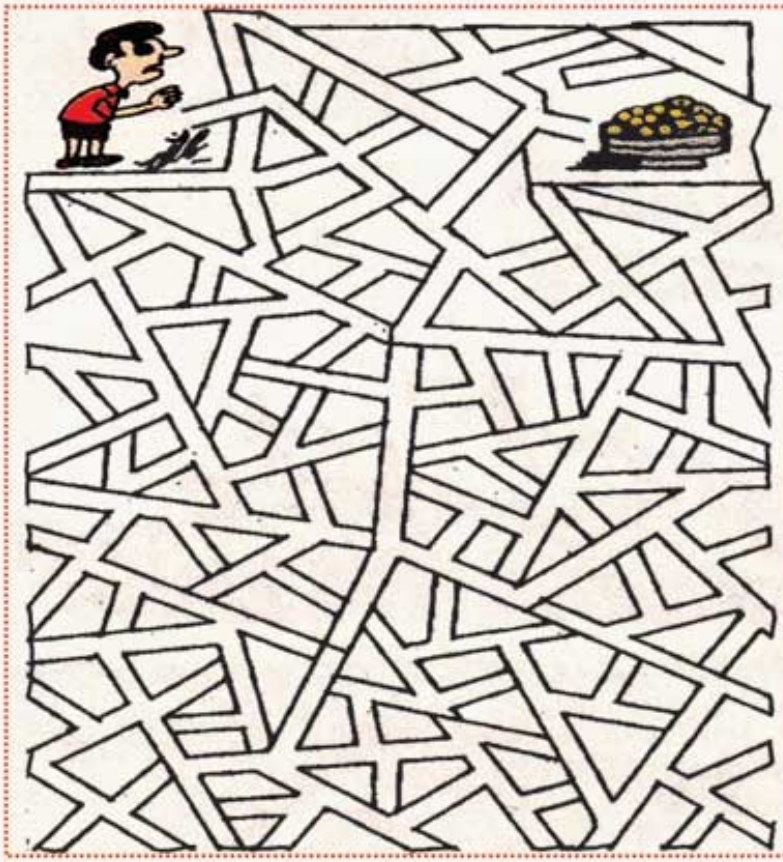

भूल भुलैया

चाँद मो.घोसी

सुनील राखी के लिए बने लड्डू खाना चाहता है परन्तु भूल-भूलैयां के कारण वह लड्डुओं की टोकरी तक पहुंचने में असमर्थ है, क्या आप सुनील की मदद उन लड्डुओं तक पहुंचने में कर सकते हैं?

● मेड़तासिटी (राज.)

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. राकेश चक्र द्वारा लिखित देशभक्ति भावों से भरी पुस्तकें
हरेकृष्ण प्रकाशन, ९० बी, शिवपुरी मुरादाबाद २४४००१ द्वारा प्रकाशित

देश के नौजवान
२४ राष्ट्रभक्ति एवं विविध विषयों पर रोचक बाल कविताएँ।
मूल्य ५०/-

देश बने सोने की चिड़िया
राष्ट्रभावना से भरे गीतों के साथ और बालप्रिय विषयों पर २३ रसीले गीत।
मूल्य ४०/-

आरती प्रकाशन इन्दिरा नगर, लाल कुंआ, नैनीताल द्वारा प्रकाशित तीन सचित्र गीत पुस्तकें

पूरे हिन्दुस्तान से
१६ बाल गीत
मूल्य ४५/-

प्राणों से प्यारा है झण्डा
१५ बाल गीत
मूल्य ४५/-

प्रेम के दीप जलाओ
१४ बाल गीत
मूल्य ४५/-

खिलते फूल लहराता तिरंगा
श्री खेलन प्रसाद कैवर्त 'अभिनव' द्वारा रचित बालमन के ५२ गीतों की विविध रंगी विषयों से सजी प्रस्तुती
प्रकाशन - वैभव प्रकाशन, अमीन पारा चौक, पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.)
मूल्य १००/-

श्री छोटेलाल पाण्डेय की अत्यंत ओजस्वी एवं प्रवाहमयी लेखनी से निसृत अमर राष्ट्रनायकों पर रचित पांच प्रबंध काव्य

मेकल की सिंहनी
अंवतीबाई लोधी पर केन्द्रित
मूल्य २५०/-

वीरांगना झलकारी
लक्ष्मीबाई की अनन्य सहायिका
मूल्य २००/-

तीर्थराज हुसैनीबाला
भगतसिंह पर केन्द्रित
मूल्य १५०/-

शहीद मंगल पाण्डे
१८५७ के प्रथम क्रांतिकारी पर केन्द्रित
मूल्य २००/-

महाराणा का शौर्य
राणाप्रताप पर केन्द्रित
मूल्य २००/-

प्रकाशक - अंशिका पब्लिकेशन १०५ एफ/३ ओम गायत्री नगर, इलाहाबाद-२

यह कृतियां बाल साहित्य की परिधि पार होकर भी राष्ट्रभक्ति जगानेवाली पठनीय रचनाएं है।

रंग भरो

मैं डॉब करती हूँ... मध्यप्रदेश
अभियान' की प्रेरक भी हूँ...
मेरे साथ इस महाअभियान से
स्कूल चलें
बस एक
या
लॉगऑन करें:
या
संपर्क करें: जि
विकासखंड शि
हम सबके
स्कूल चलें हम
बच्चों को ज्ञान
आप व्यक्तिग
मीडिया सहयो
पढ़े ना कोई 12वीं से कम
www.facebook.com/schoolchalehum.mp.gov.in
www.school

मेरे प्रदेश का हर बच्चा
स्कूल जाए, पढ़े और आगे बढ़े।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

के 'स्कूल चलें हम
ाइए, आप भी
ुड़िए...

पारसचन्द्र जैन
मंत्री, स्कूल शिक्षा, म.प्र.

ज्ञान सिंह
मंत्री, आदिम जाति कल्याण, म.प्र.

दीपक जोशी
राज्य मंत्री, स्कूल शिक्षा, म.प्र.

ं हम अभियान के प्रेरक (मोटिवेटर) बनने के लिए
िस्ड कॉल करें: **0755-2570000** नंबर पर

www.schoolchalehum.mp.gov.in वेबसाईट पर

ना शिक्षा अधिकारी/जिला परियोजना समन्वयक/
क्षा अधिकारी/विकासखंड स्त्रोत केन्द्र समन्वयक अथवा स्थानीय जनशिक्षक से।

क प्रयास, रचेंगे इतिहास

अभियान के प्रेरक (मोटिवेटर) बनें और प्रदेश के सभी
का प्रकाश दिलाने में सहयोग करें।

ात रुप से, संस्थागत रुप से, अपने औद्योगिक प्रतिष्ठान के रुप में एवं
ी के रुप में स्कूल चलें हम अभियान के प्रेरक (मोटिवेटर) बन सकते हैं।

स्कूल चलें हम अभियान
मध्य प्रदेश

chalehum.mp.gov.in

R.O. No. D- 379299

राम की राखियां

कथा - चंदा सिंह

चित्रकथा - देवांशु वत्स

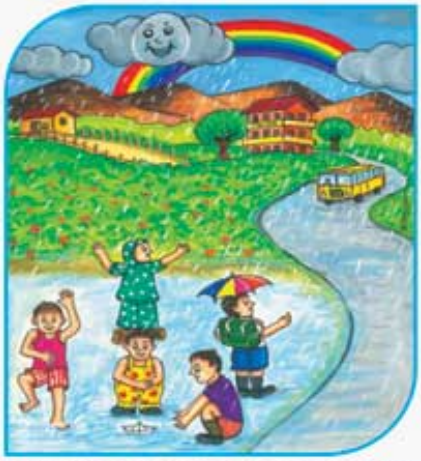

कविता बनाइए (१८)

की चयनित रचनाएं

जून २०१६

वर्षा के पानी में नाव कागज की कुछ देर चले।
पानी ऊपर से आए या नीचे से ही नाव गले
छोड़े नाव साथ मगर कविता ना छोड़े
मुझे गुदगुदाए किसी और को जचे न जाँचें

● अम्बर ईश्वरचंद, बीकानेर (राज.)

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

युवा साहित्यकार सम्मानित होंगे।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ विगत २१ वर्षों से पं. प्रताप नारायण मिश्र युवा साहित्यकार सम्मान से साहित्यकार को सम्मानित करता आया है इसी क्रम में इस वर्ष भी युवा साहित्यकारों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित है। इच्छुक साहित्यकार अपनी प्रकाशित मौलिक पुस्तक, आयु प्रमाण पत्र के साथ भेजें। रचनाकार की आयु १ अगस्त २०१६ को ४० वर्ष से अधिक न हो। पुरस्कृत होने वाली रचनाओं की विधा हिन्दी में लिखित-काव्य, कथा-साहित्य, बाल-साहित्य, पत्रकारिता एवं संस्कृत भाषा में लिखित ग्रंथ की समस्त विधा हैं। चयनित प्रत्येक विधा में एक साहित्यकार को पुरस्कार स्वरूप सरस्वती प्रतिमा, अंग वस्त्र एवं दस हजार रु. की धनराशि प्रदान की जाएगी।

लेखक अपनी कृति बायोडाटा के साथ २० अगस्त २०१६ तक -

भाऊराव देवरस सेवा न्यास, सी-९१, निराला नगर, लखनऊ २२६०२० (उ.प्र.) के पते पर भेज सकते हैं।

समाचार

बाल साहित्य सृजनपीठ ने सिखाया कहानी कैसे रचें?

विश्वनाथ धाम सांवेर। बाल साहित्य सृजन पीठ इन्दौर द्वारा सांवेर मार्ग स्थित आवासीय विद्यालय श्री भारतीय शिक्षा संस्कृति संस्थान, श्रीविश्वनाथ धाम में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। ३ जुलाई २०१६ रविवार को इस कार्यशाला में दिनभर विभिन्न सत्रों में ४५ बच्चों ने विषय विशेषज्ञ श्रीमती नियति सप्रे एवं डॉ. विकास दवे के मार्गदर्शन में कहानी

का व्याकरण, विषय चयन, प्रकार एवं लेखन की अनेक बारीकियाँ समझी और स्वयं कहानियाँ लिखी जिनकी समीक्षा श्री गोपाल माहेश्वरी ने कर सुधारात्मक सुझाव दिए।

कार्यशाला के संयोजक संस्थान के प्राचार्य श्री सुधीर महरोलिया थे।

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

• संस्थानों/विद्यालयों के लिए १० से अधिक अंक की सामूहिक सदस्यता हेतु वार्षिक सदस्यता	११०/-
• एक अंक	१५/-
• वार्षिक सदस्यता	१५०/-
• त्रैवार्षिक सदस्यता	४००/-
• पंचवार्षिक सदस्यता	६००/-
• आजीवन सदस्यता	११००/-

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना